



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोपाद्रि

31वां अंक : 2024-25



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

--





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोपाद्री

अर्द्धवार्षिक : 31वां अंक
2024-25

संरक्षक

विशाल बंसल

प्रधान महालेखाकार



प्रकाशकीय

महेश प्रसाद श्रीवास्तव

उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादक मण्डल

मनीष कुमार

सहायक निदेशक (राजभाषा)

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

विजय सिंह मीना

सहायक पर्यवेक्षक

निधि गौतम

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

स्वेता रविदास

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुख्य पृष्ठ छायाचित्र - महेश्वर किला

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं, उनसे कार्यालय अथवा संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अपना लेख एवं सुझाव सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम),
मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर - 474002 को भेजें।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना/लेख	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश (संरक्षक की कलम से..✍)	-	
2.	प्रकाशकीय	-	
3.	संदेश	-	
4.	संपादकीय	-	
5.	कचनार की छांव तले	सारिका शर्मा	01
6.	घड़े का प्रारब्ध (दो घड़ों का वार्तालाप)	विजय सुगंधी	03
7.	भारत में कार्य घंटे: आदर्श सीमा और महत्व	शिखा मलिक	04
8.	जुले लद्दाख	धनंजय कुमार	07
9.	जिंदगी अधूरी	अखिलेश चंद्र बाजपेयी	11
10.	जादुई मंत्र	अर्चना मानव	12
11.	पीढ़ी का टकराव	स्वर्णलता गुप्ता	15
12.	भारतीय नृत्य एवं संगीत	स्वेता रविदास	17
13.	बाबा विश्वनाथ की नगरी-काशी	शिवानी गुप्ता	19
14.	माँ	रत्नेश कुमार मिश्रा	22
15.	मिथिला: संस्कृति, इतिहास और परंपरा की अनूठी विरासत	आनंद कुमार झा	23
16.	आदमी	चंद्रपाल सिंह यादव	26
17.	मेवाड़- एक संक्षिप्त परिचय	विजय सिंह मीना	27
18.	दूरी की यह दीवार... (एक सरकारी अफसर की व्यथा)	अनुपम मिश्रा	31
19.	महिलाओं की भागीदारी	अवनी जैन	33
20.	बुंदेलखंड: एक संक्षिप्त परिचय	शिवम शर्मा	35
21.	मेरी रेल यात्रा के अनुभव	निधि गौतम	38
22.	बच्चों का अनुशासन	अशोक कुमार यादव	39
23.	संतोष	नीरज मित्तल	42
24.	ऊटी: बादलों के बीच बसा एक जादुई शहर	सेहरिश फुजेल	44
25.	संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची		47
26.	कार्यालयीन गतिविधियाँ		48
27.	कार्यालय में सेवानिवृत्त/नवनियुक्त कर्मिकों की सूची		49
28.	सम्मति प्रेषित करने वाले कार्यालयों की सूची		50

संदेश



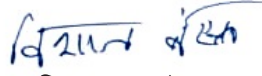
भारतवर्ष की अखंडता और एकता की द्योतक राजभाषा हिंदी को अलंकृत करती प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'गोपाद्री' का 31वां गौरवपूर्ण अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है।

हिंदी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। यह हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु है। साथ ही साथ हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिंब है।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता की सूत्रधार है। हिंदी भाषा विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिंदी महानदी। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कम्पनियाँ भी इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में भी हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

इसी क्रम में कार्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन एक रचनात्मक प्रयास है। हमारी पत्रिका 'गोपाद्री' कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी देने के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मकता एवं लेखन क्षमता को उजागर करने के लिए भी उचित मंच प्रदान कर रही है।

पत्रिका प्रकाशन में अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान करने के लिए सभी रचनाकारों को धन्यवाद और संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई। पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।


(विशाल बंसल)
प्रधान महालेखाकार



प्रकाशकीय



राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर हमारे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर की कार्यालयीन पत्रिका 'गोपाद्री' के 31वें अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोगों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कार्यालय के विभिन्न अनुभागों से प्राप्त श्रेष्ठ एवं रोचक कृतियों से सुसज्जित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देती है बल्कि यह कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा के प्रयोग हेतु निरंतर उत्साहित एवं प्रेरित भी करती है।

हिंदी भाषा ने एक सुगम वाहक के रूप में भारतीय सभ्यता की विविधता को पोषित किया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विचारों के आदान-प्रदान में भाषाई क्लिष्टता और भिन्नता के रूप में विद्यमान बाधा को हिंदी ने बड़ी सहजता से समाप्त कर सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में बाँधा है जिससे अतुलनीय सद्भावना का संचार हुआ है और इसी सद्भावना में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सार निहित है।

उत्तम संयोजन व कुशल संपादक मंडल के साथ-साथ रचनाकारों के सार्थक रचना शीर्षकों ने पत्रिका को विशेष बनाया है। पत्रिका को अपनी अमूल्य रचनाओं के माध्यम से समृद्ध करने हेतु मैं समस्त रचनाकारों एवं उत्तम संयोजन व कुशल संपादन हेतु समस्त गोपाद्री परिवार को बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(महेश प्रसाद श्रीवास्तव)

उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारा कार्यालय अपनी गृह पत्रिका 'गोपाद्री' के 31वें संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय की गतिविधियों, उपलब्धियों और नवीन पहलों को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि हमारे सहकर्मियों की रचनात्मकता, विचारों और साहित्यिक अभिव्यक्तियों को साझा करने का भी अवसर प्रदान करती है।

हमारा दायित्व न केवल सटीक और निष्पक्ष लेखापरीक्षण तक सीमित है, बल्कि एक समृद्ध कार्यसंस्कृति को भी बढ़ावा देना है, जहाँ ज्ञान, नवाचार और आपसी सहयोग फलते-फूलते रहें। इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने अनुभवों, विचारों और प्रेरणादायक कहानियों को साझा कर सकते हैं, जो न केवल हमें प्रेरित करेंगी बल्कि हमारी कार्यक्षमता को भी नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'गोपाद्री' पत्रिका के विगत अंकों की भाँति यह अंक भी कार्यालय में सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु एक उत्साहवर्धक वातावरण निर्मित करेगा। मैं सभी रचनाकारों तथा संपादक को पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यशवन्त

(यशवंत कुमार)

उप महालेखाकार
ए.एम.जी.-4

संदेश



गोपाद्री – हिंदी की अस्मिता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक

भाषा से ही सोच पनपती, शब्दों से आकार मिले,
मानव की सारी उन्नति को, वाणी के संस्कार मिले।
संवाद बने सेतु प्रगति के, जुड़ते दिल और जहान,
भाषा ने रच दी सभ्यता, बना दिया इंसान।।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा और एकता का सेतु है। यह भाषा न केवल विविधता में एकता को प्रोत्साहित करती है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत के निर्माण तक हमारे राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग रही है।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने जनचेतना जागृत करने का कार्य किया। महात्मा गाँधी ने हिंदी को जनमानस की भाषा बताते हुए इसे राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया। स्वामी दयानंद सरस्वती, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद और महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकारों ने हिंदी के माध्यम से समाज सुधार और राष्ट्रीय भावना को प्रबल किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिंदी ने प्रशासन, शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने का कार्य किया।

आज, हिंदी न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है। यह भाषा हमारी विविध सांस्कृतिक धरोहर को एक सूत्र में बाँधने का कार्य कर रही है। हिंदी का प्रचार-प्रसार हमारी सांस्कृतिक एकता को और मजबूत करता है और भारत की अनूठी विविधता को उजागर करता है।

‘गोपाद्री’ पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक संवर्धन का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। इस पत्रिका का संपादन करने वाली समर्पित टीम और इसमें योगदान देने वाले सभी लेखकों, कवियों एवं विचारकों को हार्दिक बधाई। आपके इस प्रयास से हिंदी भाषा को और अधिक समृद्धि मिलेगी और हमारी सांस्कृतिक विरासत को नई दिशा मिलेगी।

आप सभी को ढेरों शुभकामनाएँ।


(सुमित कुमार)
उप महालेखाकार
ए.एम.जी.-2

संदेश



मुझे यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'गोपाद्री' के 31वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। सर्वप्रथम, मैं कार्यालय के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु रचनाएँ उपलब्ध करवाकर इस कार्य को सफल बनाने में सहयोग दिया। मैं उन सभी पाठकों का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के पिछले अंक के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया देकर हमें इस अंक को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायता की है।

हमारा देश अनेक भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परम्पराओं के लिए विश्व-विख्यात है। जहाँ एक ओर विभागीय पत्रिकाओं को प्रकाशित करने का मूल उद्देश्य राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रेरणा एवं संबल प्रदान करना है वहीं दूसरी ओर कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना भी है। हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं, हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। हमारा सदैव ही यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी यूँ ही निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका हिंदी के विकासात्मक सफर में निश्चित रूप से सहायक होगी।

जहाँ तक इस पत्रिका में संकलित रचनाओं का प्रश्न है, तो ये इस कार्यालय में कार्यरत कर्मिकों की सृजनशीलता का अनूठा संगम बनाती हुई प्रतीत हो रही हैं। हिंदी के नवलेखकों को प्रोत्साहित करने और सुधी पाठकों तक इतनी सुंदर पठनीय सामग्री पहुँचाने के इस प्रयास के लिए मैं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी के समेकित प्रयास से 'गोपाद्री' के आगामी अंक उन्नत शिखर पर आसीन होंगे। पत्रिका को और अधिक परिष्कृत करने हेतु आप सभी के सुझाव एवं मार्गदर्शन का हृदय से सम्मान एवं स्वागत है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मंगलकामनाओं सहित।

(हरजिन्द कुमार)

उप महालेखाकार

ए.एम.जी.-3



संपादकीय



हमारी कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'गोपाद्री' के 31वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। 'गोपाद्री' पत्रिका का उद्देश्य हमेशा से यह रहा है कि हम हिंदी को प्रोत्साहित करें और इसके महत्व को प्रसारित करें। हम चाहते हैं कि सभी लोग हिंदी को न केवल समझें, बल्कि गर्व से इसका प्रयोग भी करें।

आज हम अंग्रेजी प्रभुत्व वाले वैश्वीकरण और डिजिटल युग में जी रहे हैं, इसलिए यह और भी जरूरी हो गया है कि दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हुए भी हम अपनी सभी भाषाओं और राजभाषा हिंदी की गरिमा और महत्व को बनाए रखें। ई-मेल और सोशल मीडिया में अपने भाषिक समुदायों में आपसी संपर्क के लिए अपनी मातृभाषा का प्रयोग करें परंतु जब अन्य भारतीय भाषिक समुदायों से संपर्क करें तो अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग करें। इससे न केवल हमारी मातृभाषा का अस्तित्व बना रहेगा बल्कि हिंदी के प्रयोग से राष्ट्रीय एकता की भावना भी सुदृढ़ होगी।

'गोपाद्री' पत्रिका हमारी भावनाओं और हमारे विचारों को रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करने का प्रभावशाली तरीका है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ पाठकों की साहित्यिक क्षुधा को संतुष्ट कर पाने में सफल होंगी। आप सभी रचनाकार एवं पाठक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में ऐसे ही अपना योगदान देते रहें और गोपाद्री का प्रकाशन निरंतर जारी रहे, यही हमारी शुभाकांक्षा है।

आप अपने बहुमूल्य सुझावों और मार्गदर्शन से हमें अनुगृहीत करने का कष्ट करें ताकि पत्रिका के आगामी अंकों को और भी बेहतर एवं उपयोगी बनाया जा सके।

जय भारत, जय हिंदी।

(मनीष कुमार)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कचनार की छाँव तले

श्रीमती सारिका शर्मा

पर्यवेक्षक



कचनार एक सुंदर फूलों वाला वृक्ष है। कचनार की कच्ची कली दिखने में जितनी प्यारी होती है उतनी स्वादिष्ट भी होती है जिसकी सब्जी, पकौड़े और अचार बनाया जाता है।

सामान्यतः आजकल शहरों में रास्तों और परिसरों की शोभा बढ़ाने के लिये इसको लगाया जाता है। यह हमारे कार्यालय के प्रांगण में भी लगा है। कचनार जब खिलता है तब इसकी सुंदरता देखते ही बनती है।

कचनार का वानस्पतिक नाम बहुनिया ब्लैकियाना है पर भारत में यह मुख्यतः कचनार के नाम से ही जाना जाता है। भारत में इसकी बारह से अधिक प्रजातियाँ मिलती हैं। प्रजाति अथवा भाषा के आधार पर इसे अलग-अलग नामों से भी पुकारा जाता है। मराठी में कोरल या कोविदार, बंगला में कांचन, तेलुगु में यह देवकांचनमु, कन्नड में केयुमंदार, अंग्रेजी में माउंटेन एबोनी और संस्कृत में इसे कन्दला या कचनार कहते हैं। संस्कृत में इसके विभिन्न गुणों के आधार पर भी इसका नामकरण किया गया है, जैसे गण्डारि जिसका अर्थ है चंवर के समान फूल वाला या कोविदार यानि विचित्र फूल तथा फटे पत्ते वाला। इसका वानस्पतिक नाम सन् 1850 में हांगकांग के ब्रिटिश गर्वनर सर हेनरी ब्लेक के नाम पर रखा गया था। सर हेनरी ब्लेक जाने माने वनस्पति शास्त्री थे। उनके नाम पर ही इसकी विशेष प्रजाति का वानस्पतिक नाम बहुनिया ब्लैकियाना पड़ गया था।



कचनार के पेड़ों की खासियत इसकी पत्तियाँ होती हैं। दो भागों में बँटी इसकी पत्तियाँ, एक मध्य रेखा से जुड़ी रहती है। यदि इसकी पत्ती को समतल सतह पर रखें तो यह ऊँट के पैर के समान आकृति की दिखती है। एक सामान्य पत्ती सात से दस से.मी. लंबी और दस से तेरह से.मी. चौड़ी होती है। कुछ प्रजातियों की पत्तियाँ

अपेक्षाकृत लंबी और पतली होती हैं, इन पत्तियों के द्विदलीय सिरे गोल होते हैं। कचनार की सदाबहार बहुनिया ब्लैकियाना प्रजाति गहरी बैंगनी गुलाबी होती है और नवंबर से मार्च तक खिलती है। यह फूल इतना सुंदर है कि कवियों के मन को भा जाता है और इसीलिए कचनार के फूल से सुंदरता की तुलना की जाती है।

कचनार की एक प्रजाति बहुनिया परपूरिया गुलाबी होती है और इसकी सुगंध बहुत आकर्षक होती है। इसके फूलों की पंखुरियाँ और पत्तियाँ दोनों ही अपेक्षाकृत लंबी होती हैं। बहुनिया वेरिगाटा की चार पंखुरियाँ बिल्कुल हल्की गुलाबी होती हैं और एक पंखुरी बिल्कुल गहरी गुलाबी। इसका पेड़ मध्यम आकार का होता है और पतझड़ में पूरी तरह से झड़ जाता है। कचनार मीठा गाने वाले पक्षियों को भी आकर्षित करता है। कचनार की सफेद प्रजाति बहुनिया एक्यूमिनाटा के नाम से जानी जाती है। इसका सफेद फूल आकार में बहुत छोटा होता है। इसलिये इसे बौनी सफेद बहुनिया भी कहा जाता है। यह मलेशिया, इंडोनेशिया तथा फिलीपीन में सुंदर वृक्षों के रूप में बहुतायत से उगाया जाता है। हृदयाकार पत्तियों वाले कचनार के खूबसूरत फूल सदियों से हांगकांग को अपने हल्के जामुनी रंग से रंगे हुए हैं। कचनार को 'हांगकांग आर्किड ट्री' के नाम से भी जाना जाता है। इसको हांगकांग के राष्ट्रीय फूल होने का सम्मान प्राप्त है। भारत के अत्यंत प्राचीन साहित्य में भी कचनार की उपस्थिति पाई जाती है। कचनार का पेड़ मिट्टी को बाँध कर रख सकता है। भारत में हिमालय की घाटी से लेकर दक्षिण तक कचनार की सुंदरता को देख सकते हैं। इसका पेड़ 20 से 40 फीट लंबाई तक बढ़ता है। भूस्खलन रोकने में मददगार होने के कारण इसे बहुत जगहों पर उगाया जाता है। पतझड़ के समय कचनार की पत्तियाँ झड़ जाती हैं तब यह केवल फूलों से भर जाता है।

कचनार को बहुत सी दवाइयाँ बनाने के उपयोग में भी लिया जाता है। इसकी जड़ तथा छाल विभिन्न प्रकार के चर्म रोगों के इलाज के काम आती है। कचनार की एक प्रजाति बहुनिया फोरफिकाला से मधुमेह की दवाई भी बनती है। कचनार सुंदर फूलों वाला वृक्ष है। यह विभिन्न औषधियाँ बनाने में काम आता है और किसी भी प्रकार की जलवायु के अनुरूप खुद को ढाल लेता है।

आज के प्रदूषित होते शहरों में हमें ऐसे सुन्दर और उपयोगी वृक्षों को लगाना और उनको संरक्षित करना चाहिये।



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।”

—महात्मा गाँधी



घड़े का प्रारब्ध (दो घड़ों का वार्तालाप)

विजय सुगंधी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



हे घड़ा! तू कैसे गढ़ा
नहीं तेरा कोई अंत है
रहता चमक लिए,
दिखे सुंदर सा
क्या अश्वत्थामा सा
कोई बड़ा संत है ?
(धातु के घड़े का जवाब)
हे घड़ा! मैं तो गढ़ा
सुंदर सा मेरा रूप है
हर कोई गले में फंदा डाले,
कर्म कर पानी निकाले,
क्या यही मेरा प्रारब्ध और अंत है ?
(इसे सुनकर मिट्टी के घड़े का उत्तर)
मैं निर्मोही काला घड़ा
मिट्टी से गढ़ा,
कुम्हार ने ठोका,
अंगार में पड़ा,
क्षण भंगुर मेरा अंत है
अशुद्धि को रोकूँ,
ठंडा कर देऊँ,
यही मेरा कर्म और अंत है
दोनों घड़ों का अपना अस्तित्व
न चमक मान, न ठंडा अभिमान
यही इनका प्रारब्ध एवं अंत है
काया को कोई न समझे
कर्म ही सच्चा मंत्र है।

भारत में कार्य घंटे: आदर्श सीमा और महत्व

शिखा मलिक
लेखापरीक्षक



समय के साथ भारत में कार्य संस्कृति भी विकसित हो रही है। पारंपरिक नौकरियों से लेकर कॉर्पोरेट जगत और स्टार्टअप कल्चर तक, हर क्षेत्र में कार्य समय का स्वरूप बदल रहा है। परंतु, एक महत्वपूर्ण प्रश्न आज भी बना हुआ है—एक सप्ताह में आदर्श कार्य घंटे कितने होने चाहिए?

विकसित देशों में यह बहस वर्षों से चल रही है। यूरोप के कुछ देशों में 35 घंटे प्रति सप्ताह का कार्य समय लागू किया जा चुका है, जबकि जापान जैसे देशों में 'करोशी' (अत्यधिक कार्य के कारण मृत्यु) जैसी समस्याएँ सामने आई हैं। भारत में भी, बढ़ते तनाव, वर्क-लाइफ बैलेंस की समस्या और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को देखते हुए यह चर्चा जरूरी हो जाती है कि क्या भारतीय कार्य संस्कृति में भी बदलाव की आवश्यकता है?

कार्य घंटे का निर्धारण, एक देश की श्रमिक नीति, समाज की संरचना और अर्थव्यवस्था पर आधारित होता है। आज के दौर में श्रमिकों का अधिकांश समय काम में ही बीतता है। चाहे वह कृषि क्षेत्र हो, निर्माण उद्योग हो या फिर सेवा क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में कार्य समय के बढ़ने से श्रमिकों की जीवनशैली पर गहरा असर पड़ता है। अधिकतर कामकाजी लोग दिन-रात मेहनत करते हुए अपने परिवार और व्यक्तिगत जीवन के लिए समय नहीं निकाल पाते। काम का अधिक समय केवल थकावट और तनाव का कारण बनता है, जो श्रमिकों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है। लंबे कार्य घंटों के कारण मनोबल भी गिर सकता है, जिससे श्रमिकों का काम के प्रति उत्साह कम हो सकता है।

यदि कार्य समय कम किया जाए, तो इसका सकारात्मक प्रभाव यह होगा कि वे कार्य हेतु अधिक उत्साही और सामर्थ्यपूर्ण होंगे। इसके अलावा, परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलने से श्रमिकों का पारिवारिक जीवन बेहतर होगा। यह उनकी मानसिक शांति और खुशहाली के लिए आवश्यक है, क्योंकि स्वस्थ मानसिक स्थिति में ही श्रमिक बेहतर कार्य कर सकते हैं। आदर्श कार्य घंटों के कारण श्रमिकों के जीवन का संतुलन बना रहता है, जिससे वे अपनी कार्यकुशलता और जीवनशैली दोनों में सुधार कर सकते हैं।

दूसरी ओर, जब श्रमिक अधिक घंटे काम करते हैं, तो उनका शारीरिक और मानसिक तनाव बढ़ जाता है। यह न केवल उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि इससे कार्यस्थल पर भी गलत प्रभाव पड़ता है। जब श्रमिक अत्यधिक थकान महसूस करते हैं, तो उनका कार्य प्रदर्शन भी प्रभावित होता है। उनका ध्यान बँटता है और वे अपना काम ठीक से नहीं कर पाते, जिससे उत्पादकता में गिरावट आती है। लंबे समय तक ओवरटाइम काम करने के कारण श्रमिकों का मनोबल गिरता है। इसका असर कंपनी के समग्र विकास पर पड़ता है। अंततः देश के सकल घरेलू उत्पाद को प्रभावित करता है।

भारत में श्रमिकों के लिए आदर्श कार्य घंटे निर्धारित करने की आवश्यकता इसलिए भी है, क्योंकि यहाँ की अधिकांश श्रमिक श्रेणी को कम वेतन और अनिश्चित कार्य स्थितियों का सामना करना पड़ता है। कई स्थानों पर श्रमिकों के अधिकारों का उल्लंघन भी होता है और उन्हें अधिक घंटे काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। इसके कारण न केवल उनकी कार्यकुशलता पर असर पड़ता है, बल्कि उनका पारिवारिक जीवन भी प्रभावित होता है। जब कार्य घंटों का सही तरीके से पालन नहीं होता, तो श्रमिक शारीरिक रूप से कमजोर और थका हुआ

महसूस करते हैं। यही कारण है कि आदर्श कार्य घंटों की अवधारणा को लागू करने की आवश्यकता है, ताकि श्रमिकों का शोषण न हो सके और उनका जीवन बेहतर हो सके।

इसके अलावा, समाज में कामकाजी महिलाओं के जीवन को लेकर भी यह विचार करना जरूरी है। महिलाओं के लिए आदर्श कार्य घंटों का निर्धारण खासतौर पर महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें घर और कार्यस्थल दोनों जगह जिम्मेदारियों का वहन करना पड़ता है। अधिक काम के घंटे उनके भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं, जिससे वे अपनी दोनों जिम्मेदारियों को सही तरीके से नहीं निभा पातीं। कामकाजी माताओं के लिए बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी संभालना चुनौतीपूर्ण होता है और यह उनके करियर की प्रगति में बाधा बन सकता है। अतः महिलाओं के लिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और उनके कार्य घंटे सीमित किए जाने चाहिए। इससे वे अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से निभा सकेंगी, उनके स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक असर पड़ेगा और वे अपनी कामकाजी जीवनशैली में भी प्रगति कर सकेंगी।

भारत जैसे देश में जहाँ बड़ी जनसंख्या है, वहाँ कामकाजी घंटे घटाने से बेरोजगारी को कम करने में भी मदद मिल सकती है। यदि कार्य घंटे घटाए जाते हैं, तो एक ही काम को कई लोगों में बाँटा जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी कर्मचारी के 40 घंटे की बजाय 30 घंटे काम करने की नीति अपनाई जाती है, तो अतिरिक्त काम के लिए अन्य कर्मचारियों को काम पर रखा जा सकता है। इससे बेरोजगारी की दर घट सकती है और अधिक लोग रोजगार पा सकते हैं। इस प्रकार, कामकाजी घंटे घटाने से न केवल लोगों की जीवनशैली में सुधार होता है, बल्कि यह बड़ी जनसंख्या वाले देशों में बेरोजगारी को भी कम कर सकता है, बशर्ते यह नीति सही तरीके से लागू की जाए और इसके लिए सही कार्य प्रणाली तैयार की जाए।

इसी के साथ लचीले कामकाजी घंटे भी कर्मचारियों की उत्पादकता को सुधारने में कई तरीके से मदद कर सकते हैं। सबसे पहले, जब कर्मचारियों को अपने कार्य समय को अपनी सुविधा अनुसार निर्धारित करने का मौका मिलता है, तो वे अपने समय का अधिक प्रभावी तरीके से उपयोग कर सकते हैं। यह उन्हें मानसिक रूप से कम दबाव में रखता है, क्योंकि वे अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को भी अच्छे से संतुलित कर सकते हैं, जैसे परिवार के साथ समय बिताना या स्वास्थ्य का ध्यान रखना। इसके अलावा, लचीले घंटे कर्मचारियों को अपनी अधिकतम कार्यकुशलता के समय पर काम करने का मौका देते हैं। कुछ लोग सुबह जल्दी ताजगी महसूस करते हैं, जबकि कुछ लोग देर रात बेहतर काम करते हैं। जब उन्हें अपनी पसंद के समय काम करने का अवसर मिलता है, तो वे अधिक सक्रिय और केंद्रित रहते हैं, जिससे उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ सकती है।

अन्य देशों की बात करें तो विश्वभर में कई देशों ने कार्य घंटों को लेकर कड़े नियम लागू किए हैं, जिससे उनके श्रमिकों का जीवन बेहतर हो सके। यूरोपीय देशों में अधिकांश श्रमिक सप्ताह में 35–40 घंटे काम करते हैं। कुछ देशों में ओवरटाइम के लिए अतिरिक्त भुगतान भी किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि श्रमिकों को पर्याप्त समय मिले ताकि वे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें और अपने परिवार को भी भरपूर समय दे पाएँ। यही नहीं, अमेरिका जैसे देशों में भी कार्य घंटों को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाए गए हैं, जिनका उद्देश्य श्रमिकों की भलाई है। अगर भारत भी इन देशों के अनुभवों से कुछ सीखकर अपने श्रमिकों के लिए आदर्श कार्य घंटे तय करता है, तो इससे न केवल श्रमिकों की स्थिति बेहतर होगी, बल्कि देश की समग्र अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

हाल ही में भारत में इंफोसिस के संस्थापक श्री नारायण मूर्ति ने सुझाव दिया कि देश की उत्पादकता बढ़ाने के लिए भारतीय युवाओं को सप्ताह में 70 घंटे काम करना चाहिए। उन्होंने जर्मनी और जापान का उदाहरण देते हुए भारत की कार्य उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। 70 घंटे का कार्य सप्ताह, जिसका अर्थ है छह दिनों में प्रतिदिन लगभग 12 घंटे काम करना, समर्थन और आलोचना दोनों को जन्म देता है। जबकि

माइक्रोसॉफ्ट जापान ने एक प्रयोग के तहत 4 दिवसीय कार्य सप्ताह अपनाया और पाया कि उनकी उत्पादकता में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी तरह, स्वीडन में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि 6 घंटे की शिफ्ट करने वाले कर्मचारी अधिक संतुष्ट और कुशल थे।

भारत में अधिकांश सरकारी और निजी कंपनियों में कार्य सप्ताह औसतन 48 घंटे का होता है, अर्थात् प्रतिदिन 8 घंटे और सप्ताह में 6 कार्य दिवस। कुछ निजी कंपनियों और स्टार्टअप्स में यह घंटे अधिक भी हो सकते हैं। हालाँकि, आईटी और कॉरपोरेट सेक्टर में कई जगह 5 दिवसीय कार्य सप्ताह भी देखने को मिलते हैं।

हालांकि भारत में वर्तमान में श्रम कानूनों के तहत कार्य घंटे निर्धारित किए गए हैं, फिर भी इनका पालन पूरी तरह से नहीं हो पाता है। श्रम कानूनों के अनुसार, किसी भी कर्मचारी से 48 घंटे से अधिक काम लेना अवैध है, लेकिन कई बार कर्मचारियों को ओवरटाइम, अतिरिक्त कार्यभार और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के दबाव में ज्यादा घंटे काम करना पड़ता है, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल असर पड़ता है। अगर भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाना है, तो उसे अपने श्रमिकों के अधिकारों को प्राथमिकता देनी होगी और आदर्श कार्य घंटों की व्यवस्था को सही तरीके से लागू करना होगा। साथ ही इसका उल्लंघन करने पर सख्त कार्रवाई के प्रावधान बनाने होंगे।

बढ़ती प्रतिस्पर्धा और कार्यस्थल पर बढ़ते तनाव को देखते हुए, 35 घंटे का कार्य सप्ताह और 5 दिवसीय कार्य पद्धति को अपनाना फायदेमंद होगा। इससे न केवल कर्मचारियों का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि कंपनियों की उत्पादकता और देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।

इस प्रकार, भारत में आदर्श कार्य घंटों के निर्धारण के लिए सख्त कानून अत्यंत आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप, भारत के श्रमिक अधिक खुशहाल, स्वस्थ और उत्पादक बनेंगे। यह देश की प्रगति और समृद्धि के लिए भी आवश्यक है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे श्रमिकों को पर्याप्त समय मिले, ताकि वे अपने स्वास्थ्य, परिवार और समाज के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जी सकें। श्रमिकों की मानसिक शांति और पारिवारिक संतुलन, दोनों ही उनकी कार्यकुशलता को बढ़ावा देंगे और देश की समृद्धि में योगदान देंगे। विशेष रूप से भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में जहाँ आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत अंतर है, आदर्श कार्य घंटे की आवश्यकता पर जोर देना बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। आदर्श कार्य घंटे की व्यवस्था से न केवल श्रमिकों के जीवन में सुधार होगा, बल्कि यह देश की समग्र प्रगति में भी योगदान देगा और हमारा भारतवर्ष एक विकसित देश बनने की ओर मजबूती से कदम बढ़ाएगा।

विविधताओं से भरे इस देश में लगी भाषाओं की फुलवारी है,
इनमें हमको सबसे प्यारी हिंदी मातृभाषा हमारी है।

जुले लद्दाख

धनंजय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



केंद्र सरकार द्वारा अपने कार्मिकों को भारत भ्रमण के माध्यम से देश को समझने एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई सुविधा अवकाश यात्रा रियायत (एलटीसी) का लाभ लेने हेतु हमने सपरिवार लद्दाख भ्रमण की योजना बनाई। ग्वालियर से लेह (लद्दाख की राजधानी) के लिए सीधी एवं उपयुक्त हवाई सुविधा नहीं होने के कारण दिल्ली के रास्ते जाने के लिए पहले रेलगाड़ी के द्वारा ग्वालियर से दिल्ली तथा दिल्ली से लेह हवाई जहाज के द्वारा जाने की योजना बनाई गई। जैसा कि रेल यात्रा के लिए कार्मिकों को आईआरसीटीसी के माध्यम से टिकट लेना होता है, उसी प्रकार हवाई यात्रा के लिए भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त तीन एजेंसियों यथा आईआरसीटीसी, अशोक ट्रेवल्स एवं बामर एंड लॉरी के माध्यम से टिकट लेना होता है अन्यथा आपकी अवकाश यात्रा रियायत का देयक पारित होने में मुश्किल होगी। हमने बामर एंड लॉरी के माध्यम से अपने आने-जाने की हवाई यात्रा का टिकट आरक्षित कर लिया।



लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश है तथा इसका लगभग सारा क्षेत्र पहाड़ी शृंखलाओं एवं घाटियों से भरा है। यहाँ के पहाड़ निर्जन और वनस्पति विहीन होते हैं, परंतु चोटियाँ बर्फ से ढकी होती हैं। पेड़-पौधे या तो नदी घाटियों में मिलते हैं या झील के किनारे वाली दलदली जमीन पर मिलते हैं। यहाँ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने के लिए ला (पास या दर्रा) से होकर जाना पड़ता है। लद्दाख में करीब 9 ला हैं। इनमें से हमने 2 ला से होकर अपनी यात्रा की थी। यहाँ पर घूमने के लिए सार्वजनिक परिवहन की सुविधा उपलब्ध नहीं है अर्थात् एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए बसें या परिवहन के अन्य कोई साधन उपलब्ध नहीं है। यहाँ पर लद्दाख टैक्सी ऑपरेटर कोपरेटिव लिमिटेड के माध्यम से टैक्सी, ट्रैवलर या अन्य गाड़ी उपलब्ध होती है। अतः लेह पहुँचने के बाद इस टैक्सी

ऑपरेटर से अपनी सुविधानुसार गाड़ी किराये पर लेकर घूमा जा सकता है। दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ के घूमने वाले स्थान बहुत दूर-दूर हैं तथा बीच रास्ते में खाने-पीने एवं ठहरने के लिए होटल आसानी से नहीं मिलते हैं। अतः उचित होगा कि किसी ट्रेवल एजेंसी के माध्यम से अपनी लद्दाख यात्रा की योजना बनाई जाए। इसलिए हमने भी ट्रेवल एजेंसी के माध्यम से लद्दाख यात्रा की योजना बनाई। एजेंसी द्वारा रहने के लिए होटल एवं गाड़ी की व्यवस्था की गई थी। सुबह का नाश्ता (ब्रेकफास्ट) तथा रात का खाना (डिनर) भी यात्रा पैकेज में शामिल था। लेह हवाई अड्डा से लेकर लद्दाख भ्रमण करने के उपरांत वापसी के लिए लेह हवाई अड्डा पर छोड़ने की जिम्मेदारी भी इस पैकेज में शामिल थी। तीसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ पर प्रीपेड मोबाइल काम नहीं करता है। इसके लिए आपको अपनी प्रीपेड मोबाइल सिम को पोस्टपेड करना होगा या नई पोस्टपेड सिम लेनी होगी। हाँ, होटलों एवं दुकानों में वाई-फाई की सुविधा रहती है, उसके माध्यम से हम व्हाट्सएप कॉल या इंटरनेट कॉल कर सकते हैं।

हमारी 5 दिन की लद्दाख यात्रा की शुरुआत हुई और हम प्रथम दिन सुबह 11 बजे सपरिवार लेह हवाई अड्डे (कुशोक बकुला रिम्पोछे हवाई अड्डा) पर उतर गए। ट्रेवल एजेंसी द्वारा प्रायोजित गाड़ी का ड्राइवर, हवाई अड्डे पर हम सभी को लेने के लिए उपस्थित था। ड्राइवर ने जुले (लद्दाख में जुले का मतलब नमस्ते, हैलो, स्वागत, अलविदा होता है) कहकर हम सभी का स्वागत किया तथा हम लोग हवाई अड्डे से होटल (निरन बुटिक) पहुँच गए। वहाँ पहुँचने पर बताया गया कि लद्दाख काफी ऊँचाई पर है, अतः मैदानी क्षेत्रों से आने के बाद यहाँ दो दिन के लिए लेह में ही रुकना अनिवार्य है ताकि आपका शरीर यहाँ के वातावरण के अनुकूल (अक्लीमेटाईज) हो जाए।

प्रथम दिन लेह शहर में अवस्थित स्थलों एवं बाजारों में घूमने की योजना पैकेज में शामिल थी। अतः अपराह्न 3 बजे हम सभी लेह स्थित किला (लेह पैलेस) जो पहाड़ी के ऊपर बना है, को घूमने निकल गए। यह किला 9 मंजिला है, जिसके ऊपर से पूरा लेह शहर बहुत सुंदर एवं मनमोहक दिखता है। इसके अंदर के संग्रहालय से हमें लद्दाख के बारे में विस्तृत जानकारी मिली। यहाँ पर फोटो खिंचवाकर इस किले की यादों को कैमरे में कैद कर हम सभी अगले दर्शनीय स्थल विश्व शांति स्तूप के लिए निकल गए। विश्व शांति स्तूप भी एक पहाड़ी की चोटी पर अवस्थित है। यहाँ पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी, तो हम सभी ने गर्म कपड़े पहन लिए। यहाँ महात्मा बुद्ध की बहुत ही अच्छी प्रतिमा है। यहाँ पर आकर बहुत शांति मिलती है। लेह से आसपास के पहाड़ों की चोटियाँ बर्फ से आच्छादित दिखती हैं। यह बहुत ही मनमोहक दृश्य लगता है। शाम ढलते समय ये चोटियाँ बहुत ही सुंदर लगती हैं। इसके बाद हम सभी लोग लेह के स्थानीय बाजार देखने पहुँच गए। यहाँ का बाजार बहुत ही व्यवस्थित था। हम लोग स्थानीय बाजार से यादगार बनाने के लिए कुछ खरीदारी करते हुए होटल पहुँच गए। ड्राइवर हमें बताया गया कि अगली सुबह 10 बजे लेह के आसपास के स्थलों का भ्रमण कराने की योजना है।

दूसरे दिन हम सभी ब्रेकफास्ट करके तैयार हो गए तथा नियत समय पर हम सभी गुरुद्वारा श्री पत्थर साहिब के लिए निकल गए। यह लेह से करीब 24 किलोमीटर की दूरी पर लेह-श्रीनगर रोड पर है। चारों तरफ से पहाड़ों के बीच स्थित इस गुरुद्वारे की देखरेख तथा व्यवस्था भारतीय सेना के द्वारा की जाती है। यहाँ भारतीय सैनिक आने वाले श्रद्धालुओं का स्वागत-सत्कार बहुत ही आत्मीय ढंग से करते हैं। यहाँ पर सिख पंथ के जनक गुरुनानक देव जी पधारे थे। यहाँ पर आतताइयों द्वारा गुरुनानक देव जी पर पहाड़ की चोटी से बहुत बड़ा पत्थर

फेंककर मारने का प्रयास किया गया था, परंतु उस पत्थर से गुरुनानक जी को कोई हानि नहीं हुई, वह पत्थर अभी भी इस गुरुद्वारे में है, संभवतः इसीलिए से इसे 'गुरुद्वारा श्री पत्थर साहिब' कहा जाता है।

इसके बाद हम सभी मैगनेटिक हिल के लिए रवाना हो गए। यहाँ पर गाड़ियाँ बंद कर न्यूट्रल कर देने पर ढलान के विपरीत दिशा में जाती हैं। इसके बाद हम सभी लोग सिंधु एवं जंस्कार नदी का संगम देखने संगम स्थान पर पहुँच गए। सिंधु नदी मानसरोवर झील से निकल कर लेह के रास्ते पाकिस्तान से होते हुए अरब सागर में गिरती है। यहाँ पर दोनों नदियों का संगम बहुत ही मनोहर एवं सुखदायक लगता है। यहाँ की यादों को कैमरे में लेकर हम सभी वापिस लेह के लिए प्रस्थान कर गए। अगले दिन हम सभी को नुब्रा घाटी जाना था। अगली सुबह 10 बजे हम सभी की यात्रा नुब्रा घाटी के लिए शुरू हुई। रास्ते में हमें दुनिया के सबसे ऊँचे मोटोरेबल ला (दर्श) होते हुए जाना था। घुमावदार सड़क से होते हुए हम लोग दोपहर में खारदुंग ला (17,982 फीट) पहुँच गए। यहाँ पर ऊँचाई अधिक होने के कारण बहुत ही ठंडी हवा चल रही थी। यहाँ पर ऑक्सीजन की कमी होने के कारण ज्यादा देर तक रहना संभव नहीं था। अतः हम सभी यहाँ पर फोटो खिंचवाकर तथा गर्म पेय पीकर आगे की यात्रा के लिए रवाना हो गए।



आगे घाटी से उतरते समय हम श्योक नदी के किनारे यात्रा कर रहे थे। रास्ते में सीमा सड़क संगठन के द्वारा सड़कों का चौड़ीकरण किया जा रहा था। इन दुर्गम पहाड़ियों एवं घाटियों में सड़कें बनाना बहुत ही कठिन कार्य है। अतः सीमा सड़क संगठन के समस्त जवानों एवं कार्मिकों को हृदय से आभार व्यक्त करते हुए हम दिसकित पहुँचे। यहाँ पर एक पहाड़ की चोटी पर बहुत ही अच्छा बौद्ध मंदिर (मॉनेस्ट्री) है। यहाँ पर आकर मन को बहुत शांति मिली। उसके बाद बर्फीले क्षेत्र में रेगिस्तान का सामना हुआ। यहाँ पर (हंटर में) दो कूबड़ वाले ऊँट देखने को मिले। यहाँ पर पर्यटक द्वारा ऊँट की सवारी, रेत पर चलने वाली बाइक/कार की सवारी करते हुए बहुत ही अच्छा लगता है। इसके बाद हम सभी नुब्रा घाटी पहुँचे। यहाँ पर नुब्रा नदी में कल-कल करते हुए पानी की आवाज मन को सुकून दे रही थी। इस क्षेत्र में श्योक एवं नुब्रा नदी का संगम है। नदी के बगल में ही हमारे

रहने का टेंट था जिसमें सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। यह कैंप (बिटू सामथा कैंप) सेब के बगीचों के बीच था। सेब के पेड़ पर लगे हुए सेब देखकर मन लालायित हो गया था। अतः वहाँ के बगीचे से हम लोगों ने पेड़ से ताजे सेब तोड़कर (खरीदकर) ले लिए थे। रात्रि विश्राम के बाद अगली सुबह हमें पेंगोंग झील की यात्रा करनी थी। अगली सुबह 9 बजे हम सभी नुब्रा घाटी से पेंगोंग झील के लिए निकल गए। रास्ते में आधी से अधिक यात्रा श्योक नदी के किनारे—किनारे करते हुए हम लोग दुरबुक पहुँचे। यहाँ से पेंगोंग की दूरी लगभग 50 किलोमीटर थी। यहाँ के बाद की सड़कें बहुत ही अच्छी थीं, हम लोग करीब डेढ़ घंटे की यात्रा के बाद अपने लक्ष्य पेंगोंग झील (14,272 फीट) पहुँच गए। यहाँ पहुँच कर यात्रा की सारी थकान दूर हो गई। झील का पानी देखकर मन गद्गद हो गया। पानी इतना साफ एवं स्वच्छ था कि झील के अंदर के छोटे से छोटे पत्थर भी स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

झील के पास तेज हवा चल रही थी, जिससे पानी में लहरें बन रही थी, उन्हें देखकर समुद्र की याद आ रही थी। यहाँ पर हम सभी ने खूब मस्ती की। झील के पानी का रंग मौसम एवं धूप के अनुसार इंद्रधनुषी रंगों में बदलता रहता है। हमने भी पानी का रंग सफेद, नीला एवं हरा देखा था। आकाश में बादल थे, अतः बाकी रंगों को नहीं देख पाए। यहाँ की यादों को कैमरे में कैद किया और 'थ्री इंडियट' फिल्म की शूटिंग वाले स्थान पर स्कूटी पर बैठकर फोटो खिंचवाए। यहाँ पर 'जब तक है जान' फिल्म की शूटिंग भी हुई थी। शाम में झील के किनारे स्थित वूडन कैंप (पेंग—त्सो कैंप) में रहने की व्यवस्था थी। रात्रि विश्राम के बाद सुबह होने पर वहाँ पर वर्षा हो रही थी, जिससे वहाँ पर और अधिक ठंड लग रही थी। नाश्ता करने के बाद हम सभी ने वापिस लेह की यात्रा प्रारंभ कर दी थी। रास्ते में लेह आने के लिए चांग ला के रास्ते जाना होता है। दोपहर में हम लोग चांग ला (17,590 फीट) पहुँचे। जब हम वहाँ पहुँचे तो ठंडी हवा चल रही थी, थोड़ी देर बाद वहाँ पर बर्फबारी होने लगी। हम सभी ने जिंदगी में पहली बार बर्फबारी होते प्रत्यक्ष देखी। मन प्रफुल्लित हो गया। वहाँ पर गर्म पेय पीते हुए यादों को वीडियो एवं फोटो में कैद करते हुए लेह के लिए प्रस्थान किया।

लेह पहुँचकर हम लोग 'थ्री इंडियट' का 'रैंचो स्कूल' देखने पहुँचे। यह स्कूल बहुत व्यवस्थित है। इस स्कूल को अनेक पुरस्कार भी मिले हैं। उसके बाद हम सभी भारतीय सेना द्वारा स्थापित एवं संचालित 'हॉल ऑफ फेम' देखने पहुँचे। इस संग्रहालय में डोगरा रेजीमेंट एवं लद्दाख क्षेत्र के इतिहास एवं वीरगाथा का सजीव चित्रण किया गया है। यह बहुत प्रेरणादायक एवं आकर्षक है। यहाँ पर 'अमर जवान ज्योति' एवं इस क्षेत्र में शहीद हुए सैनिकों की याद में उनके नाम सहित स्मारक बनाए गए हैं। यहाँ आकर हमें अपने भारतीय सैनिकों पर गर्व महसूस होता है।

इस प्रकार, लेह में रात्रि विश्राम कर अगली सुबह की हवाई यात्रा के लिए पुनः लेह हवाई अड्डा पहुँचकर 'जुले लद्दाख' कहकर दिल्ली होते हुए अपने कार्यस्थल ग्वालियर पहुँच गए। इस यात्रा के दौरान ज्ञात हुआ कि लद्दाख बहुत ही अच्छी जगह है। यहाँ के लोग बहुत मिलनसार, सहयोगी एवं सीधे—सच्चे हैं। पूरी यात्रा के दौरान हमें कहीं भी किसी प्रकार की समस्या का अनुभव नहीं हुआ।

जिंदगी अधूरी

अखिलेश चन्द्र बाजपेयी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



जो शब्द कहे नहीं गये
वो जिंदगी अधूरी कर गये,
याद आती है तुम्हारी
अब भी शाम के धुंधलके में
जो शब्द कहे नहीं गये
वो जिंदगी अधूरी कर गये।

वो पुरानी कहानी
जो मेरे हिस्से में आयी
हिस्सों में रह गयी
अब संजो रहा हूँ,
नहीं हो पास मेरे
तुमको ढूँढ रहा हूँ,
जो शब्द कहे नहीं गये
वो जिंदगी अधूरी कर गये।

मिलना—मिलाना, घूमना
चाय का बहाना, न मुलाकातों का दौर
न पत्र, न रुमाल, न फूल
कुछ भी नहीं था,
आँखों से आँखों का मिलना,
शर्म से खुद में सिमटना,
न कुछ कहना, न कुछ सुनना,
नजरों का इधर—उधर करना,
इंकार भी नहीं था,
खुद से इजहार भी नहीं था,
अंततः चुप ही रह गये
जो शब्द कहे नहीं गये
वो जिंदगी अधूरी कर गये।

जादुई मंत्र

अर्चना मानव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



शब्दों का जादू चलाना जिसे आ जाए,
कसम से, उसकी जिंदगी में नूर आ जाए,
फँस जाते हैं लोग शब्दों के जंजाल में,
कुछ सुलझ जाते हैं तो कुछ उलझ जाते हैं,
कई अर्थों का भँवर है शब्दों का मायाजाल,
कुछ उभर जाते हैं तो कुछ डूब जाते हैं,
शब्दों की जादूगरी भी बहुत कमाल है,
कुछ उत्साहित हो जाते तो कुछ हतोत्साहित,
शब्दों का जादू चलाना जिसे आ जाए,
सिसक—सिसक कर दम तोड़ती जिंदगियों में,
जान डाल कर चमत्कार करना आ जाए।।

आज चर्चा है एक ऐसे जादुई मंत्र की जिसमें छुपा है एक गूढ़ रहस्य। अगर आप मौत के मुँह में भी हों तो इसके प्रयोग से बच कर निकल सकते हैं। आप इस मंत्र को आजमा कर अपने ऊपर आ रही विपदाओं को दूर कर सकते हैं। चलिये, कुछ संकेत देती हूँ आप लोग अनुमान लगाइए कि वो जादुई मंत्र क्या हो सकता है?

आप लोगों ने वो गाना तो सुना ही होगा “क्या खूब लगती हो, बड़ी सुंदर दिखती हो” नायक जब अपनी नायिका की ऐसी तारीफ करता है, तो वो इतनी खुश हो जाती है कि कहती है “फिर से कहो, कहते रहो, अच्छा लगता है”। भले ही ये गाने की चंद लाइनें हों, लेकिन असली जिंदगी में तारीफ बिल्कुल जादू की तरह असर करती है। इससे मस्तिष्क में हैप्पी हार्मोन्स रिलीज होते हैं, जिससे हमें खुशी मिलती है, आत्मविश्वास बढ़ता है, तनाव दूर होता है और तो और व्यवसायिक जिंदगी में तो ये उत्पादक क्षमता को भी बढ़ाने का काम करता है। एक ऐसा वाक्य, जिसमें सच्ची तारीफ हो, वह अवसाद भरे दिल को फिर से उत्साहित और तंत्रित बना देता है। आपके द्वारा कहा गया वाक्य ‘आपने यह अच्छा किया’ में एक अदृश्य शक्ति होती है जो किसी टॉनिक की तरह असर करती है। आपने अक्सर गौर किया होगा कि युद्ध के मोर्चे पर जवानों को ‘शेरदिल बहादुर’ कहा जाता है और उनके दमखम की सराहना करते ही जवान पसीना पोंछकर फिर से डट कर खड़ा हो जाता है। खिलाड़ी भी अपने टीम लीडर की केवल तारीफ भरी नजर से दोगुनी ऊर्जा पा लेते हैं और कई बार हारी हुई बाजी जीत लेते हैं। तारीफ का सकारात्मक असर सिर्फ रिश्ते और कार्यस्थल पर ही देखने को नहीं मिलता, बल्कि इसे कहीं भी किसी के साथ भी आजमाकर देख सकते हैं।

चलिये, एक उदाहरण से समझते हैं कि अगर किसी बच्चे को उसकी एक छोटी सी गलती पर हम ये कह दें कि तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता, बिल्कुल बेकार हो, किसी काम के नहीं हो, पता नहीं आगे तुम्हारा क्या होगा? वगैरह—वगैरह। तो इस प्रकार के शब्द उस मासूम बच्चे के दिलों—दिमाग पर गहरी छाप छोड़ देते हैं और वो मान बैठता है कि वो वाकई में किसी काम का नहीं है और न ही वो कुछ बेहतर कर सकता है, लेकिन अगर इस की जगह हम तारीफ करते हुए ये कहें कि प्रयास तो तुमने बहुत बढ़िया किया लेकिन अगर इस तरह से कार्य करते तो और बेहतर हो सकता था, तो शायद वो बच्चा खुश होकर आपके मार्गदर्शन में दोगुने जोश के साथ कार्य करता। जिनके माता—पिता या अध्यापक उनके काम या प्रयास की तारीफ करते हैं, वे बच्चे दूसरे बच्चों के मुकाबले अधिक चुनौतीपूर्ण काम हाथ में लेना पसंद करते हैं, विफलता से जल्दी उबरते हैं क्योंकि इससे उन्हें सीखने को मिलता है। वे मेहनत से उपजी योग्यता पर भरोसा करते हैं। प्रोत्साहन की जरूरत बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी होती है। घर से लेकर स्कूल—कॉलेज, सार्वजनिक स्थलों और कार्यस्थल तक इसकी आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक की जरा सी तारीफ से बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ सकता है तो माता—पिता का प्रोत्साहन उसे बेहतर भविष्य की ओर बढ़ने हेतु प्रेरित करता है। सराहना के चंद शब्द रिश्तों को खुशगवार बना सकते हैं। “माँ, तुम्हारे हाथों में तो जादू है।” बच्चे की छोटी सी तारीफ माँ की जिंदगी का सबसे खूबसूरत वाक्य बन जाता है।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि जो घर का कमाऊ सदस्य होता है वो काफी रौब दिखाता है कि घर में काम ही क्या होता है? दो वक्त का खाना बनाना, चार बर्तन धोना आदि। मैं आठ घंटे बाहर काम कर के आया हूँ। ऐसी स्थितियाँ तो हम सबने देखी होंगी, शायद, यही वजह भी रही होगी कि घर में रह रही महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी आती गयी, लेकिन लोग ये क्यों भूल जाते हैं कि ये घर में रहने वाली गृहलक्ष्मी ही हैं जिसके कारण हम सभी निश्चिन्त होकर घर से बाहर कार्य कर पाते हैं। अगर इसके लिए वो तारीफ के दो शब्द कह दें तो उनमें एक नया आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाए कि उनका भी एक अस्तित्व है और शायद सिसक—सिसक कर दम तोड़ती जिंदगियों में नयी जान आ जाए। इसी तरह की प्रशंसा लड़कियों में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए भी की जा सकती है। कुछ लड़कियों में हीन भावना घर कर जाती है। किसी लड़की को लगता है कि उसका रंग सांवला होने की वजह से वो सुंदर नहीं दिखती या कद छोटा होने, ज्यादा मोटे या पतले होने की वजह से उसका मजाक उड़ाया जाता है। ऐसे में उसके गुणों की तारीफ करने मात्र से उसके अंदर आत्मविश्वास भर जाता है और वह आगे बढ़ने के लिए कमर कस लेती है। लोग बाहर खाना खाते हैं तो बैरे को ‘टिप’ देते हैं। ‘टिप’ उसकी सेवाओं की तारीफ ही होती है। घर में खाने के बदले ‘टिप’ नहीं दिया जाता, मगर सराहना में बोले गए शब्द खाना बनाने वाले को एहसास दिलाते हैं कि उसकी मेहनत को सम्मान मिल रहा है। सफाई कर्मचारी, घरेलू सहायक, रसोइया, चौकीदार, ड्राइवर... ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनकी सेवाओं के बिना जिंदगी सहज नहीं हो सकती तो उनके द्वारा किए गये कार्य की सराहना करने में क्या कंजूसी करना?

ठीक ऐसे ही हम जब कार्यस्थल पर होते हैं तो टीम के साथ मिल कर कार्य करते हैं। हो सकता है कि उस दल में कुछ लोग अच्छा कार्य करते हों और कुछ लोग गड़बड़ी भी करते हों। अब आपके पास मानवीय संसाधन उतना ही है तो वहाँ आपको निरीक्षण करके पता लगाना है कि जो बेहतर कार्य कर रहा हो, उसके कार्य का सम्मान जरूर करना चाहिए और जिससे गड़बड़ी हो रही है उसका कारण जान कर, उससे कहाँ पर त्रुटि हो रही है, उसे अवगत भी करना चाहिए। साथ ही उसके द्वारा किये गए परिश्रम की चर्चा भी अवश्य करनी चाहिए क्योंकि कार्यस्थल में अच्छे कार्य की तारीफ कर्मचारी को बेहतर काम करने हेतु प्रेरित करती है। आप पूरी मेहनत और जी जान से अपना काम करते हैं, लेकिन ऑफिस में आपके काम को सराहने के बजाय जब बॉस या मैनेजर उसमें कमियाँ निकालता रहे, तो ऑफिस में काम करना बोझिल लगने लगता है, वहीं दूसरी तरफ बॉस की एक छोटी सी तारीफ टीम को और अच्छे से काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। तारीफ करने से काम करने की गति और रचनात्मक क्षमता बढ़ती है और आप अपने कार्य में कुशल भी बनते हैं।

अपनी तारीफ सुनना किसे नहीं भाता है? सभी चाहते हैं कि लोग हमारे कार्यों, प्रयासों की सराहना करें, पर जब खुद को तारीफ के दो बोल बोलने पड़ते हैं तो जाने क्यों हमारी जुबान पर ताला लग जाता है? सिर्फ एक स्थान है जहाँ हर आगंतुक मुक्त कंठ से सिर्फ तारीफ करता है, उसका नाम है 'शोक सभा'। तारीफ करने के लिए शोक सभा की प्रतीक्षा न करें। तारीफ को आप सकारात्मक ऊर्जा कह सकते हैं। यह एक ऐसा भाव है जो मिलने वाले का उत्साहवर्धन तो करता ही है साथ ही उसके व्यक्तित्व को निखारने में भी सहयोग करता है। तारीफ मुक्तकंठ से करें, पर चाटुकारिता नहीं। चाटुकारिता में अपना उल्लू सीधा करने की मंशा होती है। साथ ही यह भय होता है कि अगर सत्य वचन कहे जाएँ तो कहीं कोपभाजन न बनना पड़े। अतः तारीफ करना अच्छी बात है, लेकिन झूठी और बेमन से की गई तारीफ काम बिगाड़ भी सकती है। इसका भी ध्यान रखें।

अगर मैं आपसे पूछूँ कि दुनिया का सबसे बड़ा जादूगर कौन है ? बेशक आपका जवाब होगा ईश्वर, भगवान, अल्लाह। लेकिन क्या आपने कभी उन्हें खुद के लिए जादू चलाते देखा है या जब मन चाहा जादू चला लिया, नहीं ना, क्योंकि यह सृष्टि का नियम है। जिसके पास शक्ति है उसे यह पता है कि उस शक्ति/जादू का प्रयोग कब, कहाँ और कितनी मात्रा में करना है? ठीक वैसे ही जब भी आप किसी की तारीफ करें तो इस बात का ख्याल रखें कि कहीं आपके द्वारा की गयी तारीफ से सामने वाला व्यक्ति अहंकारी न बन जाए और अहंकार में वो खुद को बेहतर बनाने के बजाय अपने अन्तर्निहित गुणों को भी समाप्त न कर दे। इसलिए शब्दों से की जाने तारीफ केवल तभी करें जब वाकई लगे कि सामने वाले ने प्रशंसनीय कार्य किया है। उसके द्वारा किये गए कार्य की सराहना अवश्य करें या आपको ऐसा लगे कि आपके द्वारा कहे गए प्रशंसनीय कथन से सामने वाले व्यक्ति में नयी उर्जा का संचार हो सकता है या वो अपने अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को निखार सकता है तो ऐसी परिस्थितियों में निःसंकोच तारीफ करें।

यह केवल किसी को प्रसन्न करने की कला ही नहीं है बल्कि ये विशुद्ध विज्ञान भी है। एक छोटी सी तारीफ सुनकर एक निराश मन में सकारात्मक हार्मोन सक्रिय हो जाते हैं। किसी के जीवन में नियमित संघर्ष भले ही अनगिनत हों, पर प्रशंसा करने वाले हितैषी उनको अच्छी बात कह कर दूसरों के मुकाबले ज्यादा खुश और सेहतमंद रहने में सहायक होते हैं।

तारीफ भरे शब्द व्यक्ति के कार्य का सम्मान और पुरस्कार हैं। तारीफ करें, क्योंकि तारीफ के थोड़े से शब्द किसी को आत्मिक खुशी प्रदान कर सकते हैं तो किसी की जिंदगी भी बदल सकते हैं; परंतु यह जादुई मंत्र सिर्फ उन्हीं लोगों पर कार्य करेगा जिनमें किसी प्रकार का लालच न हो। कहने का मतलब है कि जो तारीफ सुनने की लालसा में कार्य करेंगे उनके लिए ये फायदेमंद साबित नहीं हो पायेगा। इस जादुई मंत्र के कुछ विपरीत प्रभाव भी हैं। जब इसका जाप ज्यादा मात्रा में कर लिया जाता है तो हो सकता है बेहतर से बेहतरीन होने के बजाय और बदतर हो जाए। इसलिए कोशिश यही होनी चाहिए कि इसकी मात्रा संतुलित हो।



“हिंदी के द्वारा सारे भारत को
एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।”

-महर्षि दयानंद सरस्वती



पीढ़ी का टकराव

स्वर्णलता गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



जैसे दो पाटों के बीच दरार, वैसे ही दो पीढ़ी की तकरार ।
छोटे चाहते पश्चिमी बयार, बड़े सदा अनुशासित व्यवहार ॥
ऊँचा कद और ऊँचा पद ही, नई पीढ़ी का जीवन आधार ।
वृद्ध चाहते “वसुधैव कुटुम्बकम्”, अपने जीवन का आधार ॥
दिखावा, ढकोसला और आडम्बर, ये नई पीढ़ी के आचार ।
विनम्रता और संस्कारों की सीख, ये हैं वृद्धों का उपहार ॥
स्नेह—प्रेम से वंचित जन, होते स्वच्छंदता के शिकार ।
रीति—परम्पराओं से अंजान, होते कुमार्ग की ओर अग्रसर ॥
नई पीढ़ी की शिक्षा नई, जीवन के पैमाने नित नए—नए ।
कर न सकते कल्याण जगत का, ऐसे मत हैं नए—नए ॥
क्या कर गुजरेंगे ये अलबेले, संस्कारहीन और स्नेहवंचित ।
मॉल में ढूँढ़ते खुशियाँ झूठी, सच्चे प्यार से हैं अपरिचित ॥
रहते अछूते परम्पराओं से, नहीं करते मानवोचित व्यवहार ।
धर्म—अधर्म का ज्ञान अधूरा, आता नहीं नैतिक—व्यवहार ॥
नीति—अनीति का भेद न जानें, बनते जाते स्वेच्छाचारी ।
परिवारों का मतलब न जानें, चार जनों में दुनिया सारी ॥
नई पीढ़ी, नया जमाना, नई सोच, सब जायज है ।
पर अपनी जमीं से छूटना, ये बिलकुल नाजायज है ॥

उम्रदराज होते बुजुर्ग जब, चाहते पारिवारिक एहसास ।
पाते बच्चे ऑनलाइन और होते बस नौकर पास ॥
नई पीढ़ी की कोमल पौध को, स्नेह—रस सिंचित करना है ।
काल्पनिक मिथकों के भ्रमजाल से, परिचित इन्हें कराना है ॥
पूर्ण जतन और संपूर्ण मन से, इनको सब समझाना है ।
विचार—व्यवहार कौशल, सम्प्रेषण, ये भी सब सिखलाना है ॥
अगली और पिछली पीढ़ी का अंतर हमें मिटाना है ।
शाश्वत सत्य सनातन धर्म का, अर्थ इन्हें समझाना है ॥
यथायोग्य को यथोचित सम्मान, ये सब भी सिखलाना है ।
नए और पुराने के बीच, जरूरी सामंजस्य बिठाना है ॥
सोशल मीडिया से उचित दूरी कर, दिल के करीब लाना है ।
बुजुर्गों के अकेलेपन को खिलखिलाहटों से भर देना है ॥
'जनरेशन गैप' का झूठा फंडा, भाता नहीं है दिल को मेरे ।
पर तीन पीढ़ियों के अंतर को, समझ न पाते मेरे प्यारे ॥
मेरा अनुभव तेरी तकनीक, मिलकर करेंगे खूब विकास ।
संयुक्त रहें परिवार हमेशा, सदा करें ऐसा प्रयास ॥

“सारे देश की आशा है,
हिंदी अपनी भाषा है।”

भारतीय नृत्य एवं संगीत

स्वेता रविदास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



भारतीय नृत्य और संगीत, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं। सदियों से इन कला रूपों ने भारतीय समाज को आकार दिया है और हमारी संस्कृति को अद्वितीय पहचान दी है। हालांकि, समय के साथ इन कला रूपों में कई परिवर्तन हुए हैं।

प्राचीन काल में भारतीय नृत्य और संगीत को धार्मिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का एक रूप माना जाता था। यह मंदिरों और दरबारों में देवताओं और राजाओं को समर्पित किया जाता था। पद अथवा पैर, शारीरिक अंग एवं भाव—भंगिमाओं के द्वारा भाव प्रकट करने को नृत्य कहा जाता है। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुडी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम जैसे शास्त्रीय नृत्य रूप विकसित हुए जिनमें विशिष्ट नियम और परंपराएँ होती हैं। इन नृत्यों में कथा, भाव और मुद्राओं का विशेष महत्व होता है।



संगीत में भी वैदिक मंत्रों और भजनों का गायन महत्वपूर्ण था। प्राचीन काल में संगीत वाद्य यंत्रों का भी विकास हुआ जैसे कि वीणा, सितार और मृदंग। संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। संगीत से मानसिक शांति मिलती है एवं तनाव दूर होता है। अतः संगीत को जीवन शैली का अंग बनाने से जीवन आनन्दमय हो जाता है। यही कारण है कि पश्चिमी देशों के लोग भारतीय संगीत को अपनी जीवन शैली का अंग बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त संगीत जीविका चलाने का भी साधन है। भक्ति के लिए भी संगीत का प्रयोग अति उत्तम माना गया है।

आधुनिक काल में भारतीय नृत्य और संगीत ने नई ऊँचाइयों को छुआ है। इसने न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। नए नृत्य रूपों का उदय हुआ है जिनमें समकालीन और प्रायोगिक नृत्य शामिल हैं। नृत्य में तकनीक और संगीत के नए तत्वों का भी समावेश हो रहा है। संगीत में भी फिल्मी संगीत, पॉप संगीत और फ्यूजन संगीत जैसी नई शैलियों का विकास हुआ है। भारतीय संगीतकारों ने पश्चिमी संगीत के साथ मिलाकर नए संगीत रूपों का निर्माण किया है।

अभी के नृत्य में कई विविधताएँ हैं। एक तरफ शास्त्रीय नृत्य अपने मूल रूप में लोकप्रिय हैं, तो दूसरी तरफ हिप-हॉप, कंटेम्पररी और बॉलीवुड जैसे नए नृत्य रूप भी लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। फ्यूजन नृत्य का भी चलन बढ़ गया है, जिसमें दो या दो से अधिक नृत्य रूपों को मिलाकर एक नया रूप बनाया जाता है।

कुछ लोग जहाँ नृत्य एवं संगीत को बढ़ावा देते हैं तो कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नृत्य को गलत मानते हैं। इसका प्रमुख कारण यह भी है कि लोग अब नए नृत्य एवं संगीत प्रारूप के आधार पर नृत्य को ही गलत मानने लगे हैं। उन्हें लगता है कि नए नृत्य रूपों में पुराने मूल्यों और परंपराओं को ध्यान में नहीं रखा जाता है और ये नृत्य रूप पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हैं और भारतीय संस्कृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं और कुछ नृत्य रूपों में अश्लीलता और फूहड़ता होती है। ऐसे नृत्य युवाओं पर गलत प्रभाव डाल सकते हैं। मैं स्वयं बंगाल से हूँ जहाँ इसे संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। लेकिन मेरी कभी भी यह कहने की हिम्मत नहीं हुई कि मुझे नर्तकी बनना है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि कहीं न कहीं ये डर लगता था कि लोग क्या कहेंगे कि जीवन में यह कुछ नहीं कर पाई, नृत्य करने के अलावा इसे आता ही क्या है? क्योंकि जिस समाज से मैं हूँ वहाँ इसे बस मनोरंजन के साधन के अलावा और कुछ नहीं मानते। नृत्य एवं संगीत में कोई स्कोप नहीं मानते एवं जहाँ लोगों को लग सकता है कि सार्वजनिक रूप से गाना और नाचना ध्यान आकर्षित करने का एक तरीका है, जो उन्हें असहज कर सकता है। ऐसा नहीं है कि नृत्य एवं संगीत के प्रशंसक नहीं हैं पर लोग इसे उस तरह से बढ़ावा नहीं देते, जैसा देना चाहिए। समाज में फिट होने के चक्कर में कब अपने सपनों से दूर होती चली गयी, पता ही नहीं चला। इस डर की वजह से कभी हिम्मत ही नहीं हुई इस राह को चुनने की। जिसका पछतावा आज भी होता है। खैर, मेरा तो मानना है कि यह खुशी, उत्सव और रचनात्मकता का एक तरीका है।

यह सच है कि वर्तमान नृत्य शैलियों में कुछ कमियाँ हैं लेकिन इसे पूरी तरह से गलत मानना भी सही नहीं है। नए नृत्य रूपों ने नृत्य को और अधिक सुलभ और लोकप्रिय बना दिया है। आज के युवा नृत्यों में रुचि रखते हैं और वे नए-नए रूपों को सीखने के लिए उत्सुक हैं। कुछ लोग रीमिक्स और रैप गानों को भी गलत मानते हैं। उनका मानना है कि रीमिक्स गाने मूल गानों की सुंदरता को नष्ट कर देते हैं, जबकि रैप गाने अक्सर हिंसा और अश्लीलता को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह सच नहीं है। सभी रीमिक्स और रैप गाने एक जैसे नहीं होते हैं। वर्तमान रीमिक्स गानों और पहले के गानों में कई अंतर हैं। ये अंतर संगीत, गति, लय, विषय और गायन शैली में देखने को मिलते हैं। हालांकि, दोनों ही तरह के गानों का अपना महत्व है। पहले के गाने हमारी संस्कृति और परंपराओं को दर्शाते हैं, जबकि अभी के रीमिक्स गाने आधुनिक युवाओं को पसंद आते हैं। जो कुछ भी हो सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप खुद को कैसे व्यक्त करते हैं। यदि आपको गाना और नाचना पसंद है, तो आपको इसे करते रहना चाहिए, चाहे दूसरे कुछ भी कहें। यह आपकी खुशी और संतुष्टि के लिए महत्वपूर्ण है।

हालांकि, इन परिवर्तनों के बावजूद भारतीय नृत्य और संगीत ने अपनी प्राचीन परंपराओं और मूल्यों को बनाए रखा है। आज भारतीय नृत्य और संगीत न केवल मनोरंजन के साधन हैं बल्कि वे हमारी संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम भी हैं। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।



बाबा विश्वनाथ की नगरी-काशी

शिवानी गुप्ता
आशुलिपिक



‘काशी’ जिसे बनारस या वाराणसी भी कहा जाता है यह उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के तट पर स्थित एक प्राचीन तथा पवित्र नगर है जो संसार के सबसे पुराने बसे शहरों में से एक है। यह शहर गंगा नदी के घाटों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक काशी विश्वनाथ मंदिर स्थित है। पिछले दिनों मुझे यहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने अपने परिवार के साथ काशी भ्रमण की योजना बनाई। हम लोग ग्वालियर से बनारस के लिए रवाना हुए। सितंबर का महीना था, हल्की-हल्की बूँदा-बाँदी हो रही थी और उस समय गंगा नदी का जलस्तर बढ़ जाने की वजह से डर भी लग रहा था कि यात्रा कैसे संपन्न होगी।

हम लोग रात को रेलगाड़ी में बैठे। चूँकि बारिश हो रही थी तो मौसम बढ़िया हो गया था जिससे मेरा मन खुश था। रेलगाड़ी अपनी गति से चली जा रही थी।

चलती रेलगाड़ी छुकछुक-छुकछुक
खुशी की लहर करती मन प्रफुल्लित
बारिश की फुहारें करती मस्तिष्क
करती मन के कोने-कोने को रोमांचित
लहलहाती हरियाली करती मुझसे बातें
हवा गले लगाती, करता मन स्वर्ग-सा अनुभव
माँ-पापा की बातें और
बहन-भाई की तकरारें
तमाम स्टेशनों से गुजरते हुए
आखिर दो घंटे की देरी से पहुँचे हम बनारस।

बनारस में पहले ही कमरा बुक कर लिया था तो हमने ऑटो लिया और कमरे में पहुँचे। दोपहर का समय हो गया था तो सर्वप्रथम हम लोग नहा-धोकर माँ अन्नपूर्णा के मंदिर गये, दर्शन करने के पश्चात् अन्नपूर्णा रसोई गए। वहाँ का खाना इतना स्वादिष्ट था कि हम जल्द ही चट कर गये। फिर वहाँ से हम ‘दशाश्वमेध घाट’ पहुँचे। यह घाट गंगा नदी के सभी घाटों में से प्रमुख घाट है, जहाँ गंगा माँ की मुख्य आरती होती है और काफी भीड़ भी होती है। अच्छी तरह से आरती देखने के लिए आरती के समय से दो घंटे पहले ही आ जाना पड़ता है। आरती शाम को लगभग 6:30 से 7:30 बजे तक होती है और हम 6 बजे पहुँचे, अधिक भीड़ होने के कारण हमें कुछ नहीं दिख रहा था, इसलिए हमने नाव में बैठने का निर्णय किया जहाँ से आरती स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी। हम लोग नाव में बैठे हुए थे, हमारे चारों ओर पानी ही पानी था और हमारी नाव के ठीक सामने ही घाट पर आरती शुरू

हुई। हम सब भक्ति में डूबकर झूम-झूमकर आनंद ले रहे थे तभी अचानक से झमाझम बारिश शुरू हो गई और हम सब नाव में ही छुप गये। सुना था कुछ भी हो जाये गंगा आरती नहीं रुकती। इतनी बारिश में आरती भी बुझ गई परंतु फिर भी आरती निरंतर चल रही थी और वहाँ सभी शांति बनाकर खड़े रहे। कुछ देर बार बारिश कम हुई और हम लोग भी धीरे-धीरे नाव से बाहर निकले। फिर वहाँ से विशालाक्षी माता मंदिर पहुँचे जो दशाश्वमेध घाट से कुछ ही दूरी पर था। यह नौ शक्तिपीठों में से एक है। फिर हम गदौलिया चौक से खाना खाते हुए कमरे पर चले गए। इस तरह हमारा पहला दिन गुजरा। चूँकि हम पहले ही सब सोचकर आए थे कि हमें कब और कहाँ जाना है तो हमें ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा।

दूसरे दिन हमें काशी विश्वनाथ के दर्शन करना था इसके लिए हम सबसे पहले गंगा स्नान के लिए नमो घाट पहुँचे क्योंकि यह घाट हमारे ठहरने की जगह से कुछ ही दूरी पर था। इसके बाद फिर हम काशी विश्वनाथ मंदिर पहुँचे वहाँ लंबी कतार में लगने के 3 घंटे बाद हमें दर्शन हुए। उसके बाद दोपहर का भोजन कर कमरे में आराम किया। करीब 4 बजे हम काशी से 10 किलोमीटर दूर स्थित सारनाथ के लिए रवाना हुए। वहाँ बुद्ध मंदिर के दर्शन किए जहाँ सारनाथ में स्थित बोधि वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था। इसके बाद वहीं धमेक स्तूप देखा। यह स्तूप बौद्ध धर्म के आठ सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है। इसका निर्माण महान मौर्य सम्राट अशोक ने करवाया था। चूँकि रात हो गई थी इस वजह से स्तूप के अंदर नहीं जा सके और हमें बाहर से ही देखकर वापस आना पड़ा।

हमने योजना तो अन्य मंदिरों को देखने की भी बनाई थी परंतु रात होने की वजह से हम बाकी अन्य मंदिर जैसे – तिब्बतियन मंदिर, नेपाली मंदिर नहीं देख पाए। तिब्बतियन मंदिर शाम 6 बजे ही बंद हो जाता है तो हम मुख्य मंदिर के दर्शन किये बिना ही केवल मंदिर परिसर में घूमकर आ गये। जापानी मंदिर खुला हुआ था तो वहाँ गये तथा वहाँ विश्व शांति स्तूप देखा। वहाँ से गदौलिया के लिए निकले। वहाँ पहुँचकर काशी चाट भण्डार की प्रसिद्ध चाट खाने पहुँचे। वहाँ इतनी भीड़ थी लोग बाहर पूरा रास्ता घेरकर खड़े हुए थे। वहाँ पाँच तरह की चाट थी हमें समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सी ज्यादा अच्छी होगी तो हमने दो तरह की चाट ली जिसमें टमाटर चाट बिल्कुल अच्छी नहीं लगी परंतु मिक्स चाट का स्वाद वाकई अच्छा था। इसके बाद हम काल भैरव मंदिर गये और रात के खाने के साथ दूसरा दिन भी गुजर गया।



अब हमारी यात्रा का तीसरा और आखिरी दिन था जो सबसे अच्छा था। हमें अस्सी घाट की आरती देखनी थी जो सुबह 5 बजे से 6 बजे तक होती है। रात को देरी से सोने की वजह से लग रहा था कि हम सुबह जल्दी नहीं उठ पायेंगे परंतु हम उठ गये और जल्दी-जल्दी तैयार होकर करीब 5:15 बजे अस्सी घाट के लिए निकले।

चूँकि आरती प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक होती है तो अंतिम 15 मिनट की ही आरती देख पाये। यहाँ दशाश्वमेध घाट से काफी कम भीड़ होने की वजह से देरी से पहुँचने पर भी आरती अच्छे से देख पाये। सूर्योदय की बेला थी, सूर्य का उदय होना और उसकी लालिमा गंगा नदी पर अपनी परछाई बिखेर रही थी। सवेरे की ठंडी ताजी हवा और 'सुबह-ए-बनारस' की आरती के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम मन को आनंदित



कर रहे थे। यहाँ रोज सुबह गंगा आरती, संगीत एवं योग जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं इसलिए इसे 'सुबह-ए-बनारस' कहा जाता है। यहाँ लगभग 84 घाट हैं परंतु नाव हमें मात्र 50 घाटों की सैर कराने वाली थी क्योंकि जलस्तर अधिक होने की वजह से अन्य घाट जलमग्न थे। हम घाट देखने नाव में सवार हो गये। यह सुबह हमारी यात्रा का सबसे सुखद हिस्सा मालूम हो रही थी। हम भी घाट देखने का आनंद ले रहे थे। यहाँ से हमें प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट के दर्शन हुए जहाँ हमेशा चिताएँ जलती रहती हैं। ऐसी मान्यता है कि जिसका यहाँ अंतिम संस्कार होता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। रास्ते में जाते समय हमें हर दस मिनट में मृत शरीर को ले जाते हुए लोग दिख रहे थे। शायद आस-पास के लोग यहीं अंतिम संस्कार करने आते होंगे। बाकी घाट घूमते हुए हम अस्सी घाट वापस आ गये। वहाँ योग कार्यक्रम चल रहा था। थोड़ी देर वहाँ बैठकर चाय पीने के बाद हम बाकी प्रसिद्ध मंदिर देखने निकल पड़े। इसके लिए हमने एक ऑटो वाले से बात की जो हमें पाँच मंदिर दिखाने वाला था और हम उसमें बैठकर चल दिए। हम सबसे पहले दुर्गा मंदिर पहुँचे। इस मंदिर की पूरी इमारत लाल रंग की थी। इसके बाद सत्यनारायण मंदिर, त्रिदेव मंदिर, संकट मोचन मंदिर और न्यू काशी विश्वनाथ मंदिर गए जो कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर में बना हुआ है। इस सब के बाद हम गदौलिया चौक पहुँचे। वहाँ थोड़ी-सी खरीदारी करके, खाना खाकर बनारस रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान किया। इस तरह हमारी काशी विश्वनाथ यात्रा सकुशल संपन्न हुई।

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं
और जिनका विचार है कि हिंदी ही
भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है।

-बाल गंगाधर तिलक

माँ

रत्नेश कुमार मिश्रा
सहायक पर्यवेक्षक



दुनिया के लिये वरदान है माँ।
सन्तान को तो भगवान है माँ॥

करुणा, ममता और प्रेम है माँ।
सन्तानों का योग-क्षेम है माँ॥

है त्याग और अनुराग है माँ।
जीवन संगीत का राग है माँ॥

आशा, विश्वास की डोर है माँ।
प्रति दिवस इक नई भोर है माँ॥

जननी, पालक और शिक्षक है माँ।
आपत्ति में इक रक्षक है माँ॥

पथ निर्माता, पथ दर्शक है माँ।
हितकारी और शुभचिंतक है माँ॥

दुःख में सुख की छाया है माँ।
हमसफर है, हमसाया है माँ॥



मिथिला: संस्कृति, इतिहास और परंपरा की अनूठी विरासत

आनंद कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



मिथिला भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक क्षेत्र है। यह प्राचीन समय से ही भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। महाकाव्य रामायण की नायिका सीता की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध मिथिला वर्तमान में कोई देश, राज्य या प्रशासनिक इकाई नहीं, बल्कि भौगोलिक रूप से भारत के बिहार राज्य के उत्तरी भाग और नेपाल के तराई क्षेत्र में फैला एक ऐसा क्षेत्र है जो अपनी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, कलात्मक और बौद्धिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है और जहाँ इतिहास, परंपरा और आधुनिकता सहजता से साथ-साथ चलते हैं।

मिथिला का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है, जिसका उल्लेख वैदिक ग्रंथों और महाकाव्यों में मिलता है। वाल्मीकि रामायण तथा विभिन्न पुराणों में मिथिला नाम का संबंध राजा निमि के पुत्र मिथि से जोड़ा गया है। महाभारत में प्रदेश का नाम 'मिथिला' तथा इसके शासकों को 'विदेहवंशीय' (विदेहा:) कहा गया है। वृहद्विष्णुपुराण के मिथिला-माहात्म्य में मिथि के नाम से मिथिला तथा गंगा से लेकर हिमालय के बीच स्थित मिथिला में मुख्य 15 नदियों के तीर पर स्थित होने के कारण तीरों में भोग (नदी तीरों से पोषित) से तीरभुक्ति (तिरहुत) दोनों नाम कहे गये हैं।



अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध मिथिला, न केवल अपने ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व के लिए जाना जाता है, बल्कि यहाँ की कला, संगीत, साहित्य और परंपराएँ भी इसे एक विशिष्ट पहचान देती हैं। मिथिला की संस्कृति अपनी विविधता और गहराई के लिए जानी जाती है, जो सदियों से इस क्षेत्र के लोगों की जीवनशैली को प्रभावित करती आई है। मिथिला की अनूठी संस्कृति में अभी भी वैदेही सीता यहाँ की बेटी एवं भगवान राम दामाद के रूप में लोगों के जीवन का अभिन्न अंग हैं, जिसकी झलक यहाँ के शादी-विवाह, जन्म और अन्य शुभ अवसरों पर पालन किए जा रहे रीति-रिवाजों में स्पष्ट देखा जा सकता है।



मिथिला की सबसे प्रसिद्ध कला मधुबनी चित्रकला है। यह एक पारंपरिक चित्रकला शैली है जो दीवारों, कागज, कपड़े इत्यादि पर बनाई जाती है। महिलाओं द्वारा त्योहारों और समारोहों के दौरान घरों को सजाने के लिए एक रीति-रिवाज के रूप में शुरू हुई मधुबनी चित्रकला में जटिल ज्यामितीय पैटर्न और जीवंत प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है और चित्रों में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन से प्रेरित विषयों का चित्रण किया जाता है। इस चित्रकला के बारे में मान्यता है कि राजा जनक ने भगवान राम और सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से घरों की दीवारों पर चित्र बनवाए थे। आज, यह कला वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुकी है और मिथिला की पहचान एवं भारत की लोक कला परंपरा का प्रतीक बन गई है। अब तक इस विधा में निपुण 7 विभूतियों को मिथिला चित्रकला के लिए देश के प्रतिष्ठित पद्म सम्मानों से एवं साथ ही अनेक कलाकारों को देश एवं विश्व स्तर के अनेक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

मिथिला के लोक गीत और नृत्य इस क्षेत्र की संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। संस्कार, व्रत-उपवास, उत्सव, श्रृंगार, भक्ति-रस सहित अन्य पारंपरिक मैथिली गीत त्योहारों, धार्मिक समारोहों और शादियों के अवसर पर गाए जाते हैं। मिथिला में शताब्दियों से प्रचलित लोकगीत लोक की कुछ ऐसी विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं जिसका संबंध मिथिला के विशेष प्रकार की पौराणिक चेतना से है जैसे कि विवाह संस्कार संबंधी मैथिली लोकगीतों में प्रत्येक दूल्हा 'राम', प्रत्येक दुल्हन 'सीता', प्रत्येक समधी 'दशरथ' और प्रत्येक पिता 'जनक' के रूप में दर्शाया जाता है। झिझिया, धुनों-नाच, जट-जटिन और सामा-चकेवा जैसे नृत्य यहां के सामाजिक जीवन को दर्शाते हैं।

यहाँ की मुख्य विशेषता मैथिली भाषा और इसकी साहित्यिक धरोहर है। मिथिला के लोगों द्वारा बोली जाने वाली मैथिली भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका समृद्ध साहित्यिक इतिहास है, जिसकी रचनाएं 12वीं शताब्दी से मिलती हैं। 14वीं शताब्दी के कवि, 'मैथिल कवि कोकिल' विद्यापति को मैथिली साहित्य का सबसे महान साहित्यकार माना जाता है। उनके गीतों और रचनाओं में प्रेम, भक्ति और मानवता की गहरी अभिव्यक्ति मिलती है। इनकी अमर रचनाएँ 'पदावली' और 'कीर्तिलता' ने भारतीय साहित्य पर अमिट छाप छोड़ी है। मैथिली भाषा को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए सन् 2003 में इसे सरकार द्वारा भारत की एक आधिकारिक भाषा के रूप में संविधान की 18वीं अनुसूची में शामिल किया गया।

मिथिला में उत्तर भारत के प्रमुख पर्वों— होली, दीपावली, छठ, दुर्गा पूजा इत्यादि के साथ—साथ कुछ विशेष पर्व जैसे की जुर सितल, चौरचन, सामा—चकेवा, विवाह पंचमी, जितिया, अनंत पूजा, काली पूजा बहुत ही महत्वपूर्ण है। जुर सितल आमतौर 14 या 15 अप्रैल को मैथिल नव वर्ष के पहले दिन का उत्सव है। चौरचन (चौथ चंद्र) भाद्रपद माह की चतुर्थी तिथि की साँझ के बाद मनाया जाता है। इसमें प्रसाद के रूप में विभिन्न प्रकार के व्यंजन के साथ भगवान गणेश, भगवान विष्णु, देवी पार्वती और चंद्र देव की पूजा की जाती है। सामा—चकेवा छठ से कार्तिक पूर्णिमा तक मनाया जाता है। बहनें सामा चकेवा की छोटी मूर्तियों, दीपक और मिट्टी से भरी टोकरी लेकर छठ के घाटों के पास इकट्ठा होकर लोक नाट्य और गीत द्वारा भाई—बहनों के बीच प्रेम का उत्सव मनाती हैं। यह तब शुरू होता है जब पक्षी हिमालय से भारत के मैदानी इलाकों की ओर प्रवास शुरू करते हैं। यह मैथिल लोगों के प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान को दर्शाता है। विवाह पंचमी राम और सीता के विवाह का उत्सव मनाने वाला त्योहार मैथिली कैलेण्डर के अनुसार अग्रहायण महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन बनाया जाता है।

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में गंगा नदी, पूर्व में बंगाल एवं पश्चिम में गंडकी नदी के बीच स्थित मिथिला वर्तमान में एक सांस्कृतिक क्षेत्र है। जिसमें बिहार राज्य के उत्तरी जिलों तिरहुत, दरभंगा, मुंगेर, कोसी, पूर्णिया और भागलपुर प्रमंडल के 24 जिले एवं साथ—साथ नेपाल के तराई के पूर्वी और मध्य—विकास क्षेत्र के सात जिलों: मोरंग, सुनसरी, सप्तरी, सिराहा, धनुषा, महोत्तरी, सरलाही और रौतहट का भू—भाग आता है। प्रकृति की गोद में स्थित यह क्षेत्र उपजाऊ मैदानों, नदी प्रणालियों और आर्द्र उपोष्ण—कटिबंधीय जलवायु की विशेषता वाला है। पूरे मिथिला क्षेत्र में हिमालय से उद्गम होकर गंगा नदी में मिलने वाली नदियों का जाल सा बिछा है जो यहाँ के लिए एक वरदान के साथ—साथ बाढ़ के खतरे के लिए भी हमेशा चर्चा में रहती है। कृषि यहाँ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जहाँ धान, गेहूँ, मक्का और गन्ना प्रमुख फसलें हैं। यह क्षेत्र मखाने का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 70—80% उत्पादन करता है। आम एवं लीची के बागान भी इस क्षेत्र की पहचान हैं।

रामायण से जुड़ाव के कारण यह क्षेत्र हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल भी है। वर्तमान मिथिला के नेपाल में स्थित सीता का जन्मस्थान जनकपुर का 'जानकी मंदिर' भारत और नेपाल के भक्तों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। इसके अलावा, सीतामढ़ी, जो बिहार में स्थित है, भी एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। यहाँ पर 'ब्रह्मा सरोवर' और 'सीता की कुटी' जैसे धार्मिक स्थल हैं।

अंत में मिथिला में प्रचलित एक लोकोक्ति का वर्णन भी प्रासंगिक है:

पग पग पोखर. माछ, मखान

मधुर बोल, मुस्की, मुख पान

विद्या वैभव शांति प्रधान

यह है मैथिल की पहचान।

आदमी

चंद्रपाल सिंह यादव
लेखापरीक्षक



आदमी भूलता है,
आगे बढ़ता है।
आदमी मोम का प्यादा है,
खुद को पत्थर का समझता है।

आदमी बनता है, सँवरता है,
हर रोज बदलता है।
किसी रोज तुम पर जान छिड़कता है,
किसी रोज तुम्हें मारने को भागता है।

आदमी भटकता है,
मचलता है।
पेड़-पौधों की दुनिया को
कुछ और बनाकर,
कुछ और ढूँढने निकलता है।

आदमी इंसानियत खोजता है,
उसे कुचलता है।
आदमी कसाई है,
खुद को मसीहा समझता है।

आदमी हत्यारा है,
खुद को निर्दोष समझता है।

आदमी हकीकत को ताक पर रख कर
ख्वाबों की दुनिया में जीता है।
आदमी प्यासा है,
अपने अरमानों का ही खून पीता है।

आदमी आवारा है,
काम में बंदिश ढूँढता है।
जिंदगी को काम में बिता कर,
जिंदगी जीने की बातें करता है।

आदमी बच्चों को बच्चा समझता है,
मगर औरत को न जाने क्या समझता है।
आदमी पागल है,
खुद को समझदार समझता है।

मैं भी एक आदमी हूँ,
तुम भी एक आदमी हो।
मैं भी खुद को कुछ समझता हूँ,
तुम भी खुद को कुछ समझते हो।

मगर आदमियों की इस दुनिया में,
आदमी, आदमी को कुछ नहीं समझता है।
आदमी, हाड़-मौस का पुतला है,
खुद को पत्थर का भगवान समझता है।



मेवाड़ - एक संक्षिप्त परिचय

विजय सिंह मीना

सहायक पर्यवेक्षक



मेवाड़ भारत के राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, शौर्य गाथाओं और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। इसमें आधुनिक भारत के राजस्थान के उदयपुर, भीलवाड़ा, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ तथा प्रतापगढ़ जिले और मध्य प्रदेश के नीमच तथा मंदसौर जिले थे। इसे प्राचीन काल में मेदपाट या प्राग्वाट या शिवि जनपद के नाम से भी जाना जाता था। इसे 'उदयपुर राज्य' या 'चित्तौड़गढ़ राज्य' के नाम से भी जाना जाता था।

भारतीय इतिहास में मेवाड़ का महत्वपूर्ण स्थान है। मेवाड़ के शासकों ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष किया। प्रारंभ में, यह क्षेत्र गुहिल वंश के शासकों द्वारा शासित था, जिन्होंने चित्तौड़गढ़ को अपनी राजधानी बनाया था। चित्तौड़गढ़ किला आज भी मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास का प्रतीक है। इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई है। यह किला लगभग 700 एकड़ में फैला हुआ है और इसकी दीवारें और प्राचीरें कई ऐतिहासिक घटनाओं और कथाओं की साक्षी हैं। यहाँ पर कई दर्शनीय स्थल हैं जो किले के शौर्य और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं। चित्तौड़गढ़ किले में गणेश द्वार, हनुमान द्वार, पदन द्वार, जोडला द्वार, भैरों द्वार, लक्ष्मण द्वार एवं अंतिम और मुख्य द्वार राम द्वार है। यहाँ चार महल, 19 मंदिर, 20 जल निकाय और चार बड़े-बड़े स्मारक हैं। यहाँ कई प्रमुख संरचनाएँ हैं जो किले को और आकर्षक बनाती हैं।

रानी पद्मिनी महल: रानी पद्मिनी महल चित्तौड़गढ़ किले का एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह महल रानी पद्मिनी और उनके आत्मबलिदान की कहानी से जुड़ा हुआ है। रानी पद्मिनी सिंहल द्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री थी। उसके पास हीरामन नाम का एक तोता था। एक दिन पद्मावती की अनुपस्थिति में बिल्ली के आक्रमण से बचकर वह तोता भाग निकला और एक बहेलिए के जाल में फँस गया। बहेलिए से उसे एक ब्राह्मण ने खरीद लिया जिसने चित्तौड़ आकर उसे राजा रतनसिंह के हाथ बेच दिया। इसी तोते से राजा ने पद्मिनी के अद्भुत सौंदर्य का वर्णन सुना तो उसे प्राप्त करने के लिये योगी बनकर निकल पड़ा। जंगल और समुद्र पार कर वह सिंहल द्वीप पहुँचा। उसके साथ में वह तोता भी था। हीरामन तोते के जरिए राजा ने पद्मावती के पास अपना संदेश भेजा। इसके बाद जब पद्मावती राजा से मिलने आई तो राजा उसे देखकर मूर्छित हो गया और पद्मावती उसे अचेत छोड़कर चली गई। जाते समय पद्मावती ने उसके हृदय पर चंदन से लिखा था कि उसे वह तब पा सकेगा जब वह सिंहल गढ़ पर विजय प्राप्त कर आएगा। इसके बाद राजा ने तोते के बताए गुप्त मार्ग से



सिंहलगढ़ में प्रवेश किया। यह सूचना मिलने पर गंधर्वसेन ने रतनसिंह को पकड़वाकर सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया लेकिन जब हीरामन से रतनसिंह के बारे में पता चला तो उसने पद्मावती का विवाह उसके साथ कर दिया। राजा रतन सिंह के दरबार में राघव चेतन नामक एक तांत्रिक था जिसे असत्य भाषण के दंड में राजा रतन सिंह ने निष्कासित कर दिया था। तब वह दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की सेवा में चला गया। उसने अलाउद्दीन से पद्मावती के सौंदर्य की प्रशंसा की। आखिर जो होना था, वही हुआ और अलाउद्दीन खिलजी पद्मावती का सौंदर्य वर्णन सुनकर उसको पाने के लिए उत्सुक हो उठा और उसने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। लंबे समय तक चित्तौड़ पर घेरा डालने के बाद विफल रहने पर उसने संधि प्रस्ताव भेजा। राजा रतन सिंह संधि के लिए तैयार हो गया और सुल्तान को अपने किले में बुला लिया। जब दोनों आपस में बात कर रहे थे तो सुल्तान को रानी पद्मिनी की परछाई पानी में दिखाई दी। जिससे सुल्तान को राघव चेतन की कही हुई बात पर विश्वास हो गया। जैसे ही रतन सिंह अलाउद्दीन को विदा करने के लिए किले के बाहर निकला, धोखे से अलाउद्दीन उसे बंदी बनाकर दिल्ली ले गया। जब यह बात रानी पद्मिनी को पता चली तो रानी पद्मिनी अपने पति को मुक्त कराने के लिए अपने सामंतों गोरा तथा बादल (चाचा-भतीजा) के घर गई और उनको सारी कहानी बताई। दोनों रानी पद्मिनी की बात सुनकर राजा को मुक्त कराने के लिए तैयार हो गए। गोरा व बादल ने रतनसिंह को मुक्त कराने के लिए सोलह सौ डोलियाँ सजाईं जिनके भीतर सैनिकों को बिठा दिया और दिल्ली की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर सुल्तान के पास संदेश भेजा गया कि रानी पद्मिनी अपनी दासियों के साथ सुल्तान की सेवा में आई है। अंतिम बार अपने पति रतनसिंह से मिलने के लिए आज्ञा चाहती है। सुल्तान ने आज्ञा दे दी। डोलियों में बैठे सैनिकों ने रतनसिंह को बेड़ियों से मुक्त कराया और उसे लेकर निकल भागे। सुल्तानी सेना ने पीछा किया किंतु तब तक रतन सिंह सुरक्षित चित्तौड़ पहुँच गया। सुल्तान इस घटना से बहुत गुस्सा हो गया और सन् 1303 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण कर दिया। रानी पद्मिनी और 1600 अन्य महिलाओं ने अपनी अस्मिता को बचाने के लिए जौहर (आत्मदाह) कर लिया एवं राजा रतन सिंह ने अपने सेनापतियों गोरा और बादल सहित केसरिया (सिर पर केसरिया रंग की पगड़ी बांधकर युद्ध में वीरगति को प्राप्त होना) किया था। 25 अगस्त 1303 ईस्वी को सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ के 30,000 निर्दोष लोगों का नरसंहार करवाया था।

विजय स्तंभ: विजय स्तंभ कुम्भा महल के पास स्थित एक भव्य स्तंभ है। इसे इतिहासकारों ने भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष एवं हिंदू देवी-देवताओं से सजाया हुआ व्यवस्थित संग्रहालय बताया है। इस स्तंभ के विभिन्न भागों पर हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और चित्रकारी देखने को मिलती हैं, जो उस समय की अद्वितीय वास्तुकला और कला को प्रदर्शित करते हैं। इसे महाराणा कुम्भा ने सन् 1437 ईस्वी के सारंगपुर युद्ध में महमूद खिलजी (मालवा) को हराने के उपलक्ष्य में बनवाया था। यह 9 मंजिला इमारत है, जो 122 फुट लंबी एवं 30 फुट चौड़ी है। इसकी 8वीं मंजिल में कोई भी मूर्ति नहीं है एवं इसकी तीसरी मंजिल में 9 बार अरबी भाषा में



अल्लाह शब्द लिखा हुआ है। इसकी पाँचवीं मंजिल में इसके वास्तुकार जैता, पुंजा, पोमा व नापा के नाम लिखे गए हैं। यह स्तंभ राजस्थान पुलिस, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड व अभिनव भारत (वीर सावरकर का संगठन) का प्रतीक चिन्ह भी है।

मीरा बाई मंदिर: मीरा बाई, जो एक प्रसिद्ध भक्त कवि और भक्ति आंदोलन की महान शख्सियत थीं, का मंदिर चित्तौड़गढ़ किले में स्थित है। यह मंदिर खासकर भक्ति और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मीरा बाई के जीवन से जुड़े कई प्रसंग इस मंदिर से जुड़े हुए हैं और यह भक्ति पंथी आंदोलन का एक प्रमुख स्थल है। मीराबाई भगवान कृष्ण की बहुत बड़ी भक्त थीं। वह राजस्थान के मेड़ता की रहने वाली थी। उनकी शादी चित्तौड़गढ़ के युवराज भोज राज से हुई थी। छोटी उम्र में ही मीरा जी विधवा हो गई थीं, उन्होंने अपनी सारी उम्र भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लगा दी। कुम्भा श्याम मंदिर के बिल्कुल साथ ही मीरा बाई मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर कुम्भा श्याम मंदिर से छोटा है, इसी मंदिर में ही वह भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और कीर्तन करती थीं। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ पर ही मीरा बाई को उसके देवर ने विष दे दिया था, जो भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से अमृत बन गया था। इस मंदिर के दर्शन करके मन खुश हो जाता है।



कुम्भलगढ़ किला: इस दुर्ग का निर्माण महाराणा कुम्भा ने सन् 1459 ईस्वी को कराया था। इस किले का निर्माण कुंभा के प्रमुख वास्तुशास्त्री एवं वास्तुशिल्पी मंडन की योजना व देखरेख में किया गया। कुंभलगढ़ दुर्ग के निर्माण की कहानी भी बड़ी ही दिलचस्प है। सन् 1443 ईस्वी में राणा कुम्भा ने इसका निर्माण शुरू करवाया पर निर्माण कार्य में काफी दिक्कतें आने लगी थीं जिसके कारण निर्माण कार्य आगे नहीं बढ़ पाया।



राजा इस बात पर चिंतित हो गए और उन्होंने एक संत को बुलाया। संत ने बताया यह काम तभी आगे बढ़ेगा जब स्वेच्छा से कोई मानव बलि के लिए खुद आगे आएगा। राजा इस बात से चिंतित होकर सोचने लगे कि आखिर कौन इसके लिए आगे आएगा। तभी संत ने कहा कि वह खुद बलिदान के लिए तैयार है। इसके लिए राजा से आज्ञा माँगी और संत ने कहा कि उसे इस पहाड़ी पर चलने दिया जाए और जहाँ वो रुक जाए वहीं पर उसे मार दिया जाए और वहाँ एक देवी का मंदिर बनाया जाए। ठीक ऐसा ही हुआ और वह संत 36 कि.मी. तक चलने के बाद रुक गया और उसी जगह उसका सर धड़ से अलग कर दिया गया। जहाँ पर उसका सिर गिरा वहाँ मुख्य द्वार 'हनुमान पोल' है और जहाँ पर उसका शरीर गिरा वहाँ दूसरा मुख्य द्वार है।

इस किले पर विजय प्राप्त करना दुष्कर कार्य था। इसके चारों ओर एक बड़ी दीवार बनी हुई है जो चीन की दीवार के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी दीवार है। इस किले की दीवारें लगभग 36 किमी. लम्बी और 12

फुट चौड़ी हैं और यह किला यूनेस्को की सूची में सम्मिलित है। दीवार पर चार घुड़सवार एक साथ चल सकते हैं, इसलिए इसे 'भारत की महान दीवार' के नाम से जाना जाता है। कुम्भलगढ़ किले को 'मेवाड़ की आँख' कहते हैं। यह दुर्ग कई घाटियों व पहाड़ियों को मिला कर बनाया गया है जिससे यह प्राकृतिक सुरक्षात्मक आधार पाकर अजेय रहा। इस दुर्ग में ऊँचे स्थानों पर महल, मंदिर व आवासीय इमारतें बनायी गई हैं और समतल भूमि का उपयोग कृषि कार्य के लिए किया गया। वहीं ढलान वाले भागों का उपयोग जलाशयों के लिए कर इस दुर्ग को यथासंभव स्वावलंबी बनाया गया। इस दुर्ग के भीतर एक और गढ़ है जिसे 'कटारगढ़' के नाम से जाना जाता है। यह गढ़ सात विशाल द्वारों व सुदृढ़ प्राचीरों से सुरक्षित है। इस गढ़ के शीर्ष भाग में बादल महल है व कुम्भा महल सबसे ऊपर है। महाराणा प्रताप की जन्म स्थली कुम्भलगढ़ एक तरह से मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी रहा है। महाराणा कुम्भा से लेकर महाराणा राज सिंह के समय तक मेवाड़ पर हुए आक्रमणों के समय राजपरिवार इसी दुर्ग में रहे हैं। यहीं पर कुंवर पृथ्वीराज और राणा सांगा का बचपन बीता था। उड़ना राजकुमार कुंवर पृथ्वीराज की छतरी भी इसी दुर्ग में है। महाराणा उदय सिंह को भी पन्ना धाय ने इसी दुर्ग में छिपा कर पालन-पोषण किया था। हल्दी घाटी के युद्ध के बाद महाराणा प्रताप भी काफी समय तक इसी दुर्ग में रहे। इस दुर्ग की कई दुखांत घटनाएँ भी हैं। जिस महाराणा कुम्भा को कोई नहीं हरा सका वही शूरवीर महाराणा कुम्भा इसी दुर्ग में अपने पुत्र ऊदा सिंह द्वारा राज्य पिपासा में मारे गए।

ऊदा बाप ने मारजे, लिखियो लाभे राज।
देस बसायो रायमल, सरयो न एको काज।।

कुल मिलाकर यह दुर्ग ऐतिहासिक विरासत की शान और शूरवीरों की तीर्थ स्थली रहा है। इस किले की ऊँचाई के संबंध में अबुल फजल ने लिखा है कि यह दुर्ग इतनी बुलंदी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की तरफ देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।

(यह लेख विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर रचित है।)

“हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय-हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।”

दूरी की यह दीवार... (एक सरकारी अफसर की व्यथा)

अनुपम मिश्रा

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



मैं दूर हूँ, बहुत दूर,
परिवार से अलग, एक अनजान शहर में।
मेरी दो साल की गुड़िया रो रही है,
पिता के बिना, उसका दिल टूट रहा है।

मैं उसकी मुस्कुराहट को याद करता हूँ,
उसकी हँसी को सुनने के लिए तरसता हूँ।
लेकिन दूरी की यह दीवार,
मुझे उससे अलग रखती है, हर पल, हर बार।

मैं उसके लिए खिलौने लाता हूँ,
उसके लिए गाने गाता हूँ।
लेकिन वह मुझे देख नहीं पाती,
मेरी आवाज को सुन नहीं पाती।

मैं उसकी माँ को फोन करता हूँ,
उसका हाल पूछता हूँ।
लेकिन वह मुझे यही बतलाती है,
कि गुड़िया मुझे याद करती है, हर पल, हर बार।

मैं जल्द ही घर वापस आऊँगा,
मेरी गुड़िया को गले लगाऊँगा।
लेकिन तब तक, मैं यही रहूँगा,
उसके लिए काम करता रहूँगा।

मैं उसकी तस्वीर को देखता हूँ,
उसकी मुस्कुराहट को याद करता हूँ।
मैं उसके लिए सपने देखता हूँ,
उसके लिए भविष्य की योजनाएँ बनाता हूँ।

मैं उसके लिए इंतजार करता हूँ,
जब मैं उसे अपनी गोद में लूँगा।
लेकिन दूरी की यह दीवार,
मुझे उससे अलग रखती है, हर पल, हर बार।

मैं उसकी आवाज सुनने को तरसता हूँ,
उसकी हँसी सुनने को तरसता हूँ।
मैं उसके साथ बिताए हुए पलों को याद करता हूँ,
उसके साथ बिताए हुए दिनों को याद करता हूँ।

मैं उसके लिए एक अच्छा पिता बनना चाहता हूँ,
उसके लिए एक अच्छा दोस्त बनना चाहता हूँ।
मैं उसके सपनों को पूरा करना चाहता हूँ,
उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहता हूँ।

लेकिन दूरी की यह दीवार,
मुझे उससे अलग रखती है, हर पल, हर बार।

मैं जल्द ही घर वापस आऊँगा,
मेरी गुड़िया को गले लगाऊँगा।
मैं उसके साथ खेलूँगा,
मैं उसके साथ हसूँगा।

उसके लिए हर दिन प्रार्थना करता हूँ,
मैं उसके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।
मैं उसके लिए हर दिन त्याग करता हूँ,
मैं उसके लिए अपना सब कुछ देने को तैयार हूँ।

उसकी हँसी देखने को तरस गया हूँ मैं,
नहीं जानता सपने पूरे कर रहा या सपनों से दूर जा रहा हूँ मैं।
अफसोस ! दूरी की यह दीवार,
मुझे उससे अलग रखती है, हर पल, हर बार।



महिलाओं की भागीदारी

अवनी जैन

लेखापरीक्षक



महिला वो शक्ति है,
भारत की नारी है,
न कम में, न ज्यादा में,
उसकी भारत के विकास में,
बराबर की भागीदारी है।

—प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 'मन की बात' में कही गयी ये पक्तियाँ अपने आप में एक सार प्रस्तुत करती हैं। साथ ही मन में एक सवाल खड़ा करती हैं कि महिलाओं का देश के विकास में कितना योगदान है, क्या महिलाओं की भागीदारी के बगैर देश का विकास संभव नहीं है ?

इसी परिप्रेक्ष्य में कार्ल मार्क्स ने कहा था 'किसी देश का विकास किस गति से होगा इसका अनुमान उस देश की महिलाओं की स्थिति को देखकर ही लगाया जा सकता है।'

भारत जैसे देश हेतु तो यह कथन और भी महत्वपूर्ण व विचारणीय हो जाता है क्योंकि हमारी लगभग 48 प्रतिशत आबादी महिलाएँ हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर देश के विकास में महिलाओं की किस प्रकार की भागीदारी आवश्यक है? क्या नौकरी करके अर्थव्यवस्था में शामिल होकर ही मात्र देश की जीडीपी में योगदान दे सकती है, या बिना अर्थव्यवस्था में जुड़े भी अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी है ?

इस प्रश्न का उत्तर हमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक सभी आधारों पर तलाशना होगा।

यदि प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी देखें तो महिलाओं की रोजगार कार्यबल में सहभागिता से देश की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से बढ़ेगी। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा प्रदान किए गए आँकड़ों के अनुसार देश में महिला कार्यबल की बराबर भागीदारी से देश की जीडीपी में 27 प्रतिशत तक की वृद्धि की जा सकती है। महिला भागीदारी से घर की आय दोगुनी हो जाएगी।

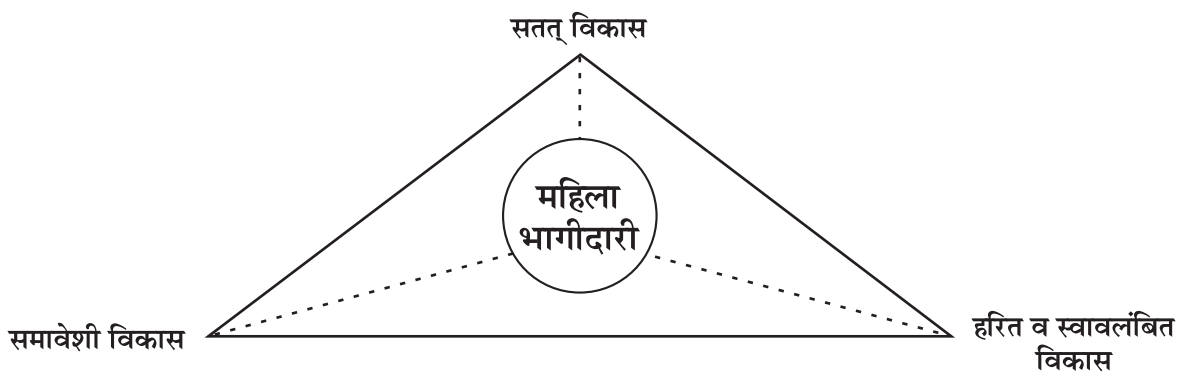
प्रत्यक्ष सहभागिता के साथ-साथ अप्रत्यक्ष सहभागिता भी अति क्रांतिकारी परिणाम ला सकती है—महिलाओं की सामाजिक भागीदारी: महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच करा देने पर वे पढ़ी-लिखी जागरूक व तार्किक आधारों पर चिंतनशील बनती है। इससे बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाएँ कम होंगी। साथ ही महिलाएँ गर्भावस्था, कुपोषण, संस्थागत प्रसव के प्रति जागरूक होंगी।

शिक्षित महिला को स्वच्छता, साफ—सफाई का विशेष ध्यान रहेगा क्योंकि वह कीटाणु, विषाणु एवं इनसे होने वाली संक्रामक बीमारियों को समझती है। आँकड़ों के अनुसार स्वच्छता के माध्यम से देश के सकल घरेलू उत्पाद में 3—7 प्रतिशत की बढ़ोतरी की जा सकती है। क्योंकि स्वच्छता का अतिध्यान देने से कुपोषण, खेतों में शौच, डेंगू, डायरिया आदि बीमारियों पर होने वाला सरकारी खर्च कम होगा।

यदि एक पुरुष को शिक्षित किया जाता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है परंतु एक महिला को शिक्षित करने पर पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है अर्थात् महिला की सहभागिता, महिला सशक्तीकरण से पूरे परिवार का सशक्तीकरण होता है। महिलाओं की भागीदारी का अन्य आयाम पर्यावरण के संदर्भ में भी उभरता है। वस्तुतः महिला भागीदारी से हम घर में जलाए जा रहे चूल्हों से होने वाले प्रदूषण के प्रति जागरुकता फैला सकते हैं। अतार्किक कृषि को पर्यावरण अनुकूल बना सकते हैं। घर में महिलाएँ यदि बिजली का मितव्ययी तरीके से उपयोग करें और पानी की बर्बादी रोकें तो हम बड़े स्तर पर पर्यावरण सुरक्षा की ओर बढ़ सकेंगे और इस तरह हुआ विकास हरित विकास होगा जिससे हरित सकल घरेलू उत्पाद व हरित अर्थव्यवस्था प्राप्त हो सकेगी।

“यदि भविष्य होगा, तो वह हरित होगा

यदि वह हरित नहीं है, तो वह भविष्य ही नहीं होगा”



वस्तुतः महिला भागीदारी से देश को आत्मबल प्राप्त होता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था “जो कार्य 500 पुरुष दशकों में पूरा करेंगे, वही कार्य मैं मात्र 50 स्त्रियों की सहायता से कुछ वर्षों में पूरा कर सकता हूँ।”

देश की 48 प्रतिशत जनसंख्या, महिला होने के बावजूद हमारे भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी मात्र 22 प्रतिशत है। महिलाओं की राजनीति में भागीदारी केवल 11 प्रतिशत है। संयुक्त राष्ट्र का ‘जेण्डर इक्वैलिटी इण्डेक्स’ भी इस तथ्य से सामंजस्य प्रस्तुत करता है।

ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि इस दिशा में हम तत्परता से प्रयास करें। भारत सरकार ने भी इस दिशा में अति सक्रियता दिखायी है।



बुंदेलखंड: एक संक्षिप्त परिचय

शिवम शर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



आज मैं भारत के एक ऐसे स्थान के बारे में बात करने वाला हूँ जो वर्तमान में न तो प्रदेश है और न ही कोई शहर। मैं बात करने वाला हूँ बुंदेलखंड की जो कि तमाम विविधताओं एवं संस्कृतियों को समेटे हुए भारत के मध्य भाग में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के कुछ जिलों को मिलाकर स्वयं का निर्माण करता है। बुंदेलखंड उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के जिलों को मिलाकर बनता है जिनमें से उत्तर प्रदेश के झाँसी, ललितपुर, जालौन, महोबा, बांदा, हमीरपुर, चित्रकूट जिले एवं मध्य प्रदेश के सागर, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, दतिया, पन्ना और दमोह जिले शामिल हैं। बुंदेलखंड का प्रत्येक शहर अपने आप में अनूठा है। यहाँ के जिलों के बारे में कई प्रकार की कहावतें प्रसिद्ध हैं जिनमें से एक कहावत इस प्रकार है —

झाँसी गले की फाँसी, दतिया गले का हार,
ललितपुर न छोड़ियो, जब तब मिले उधार।

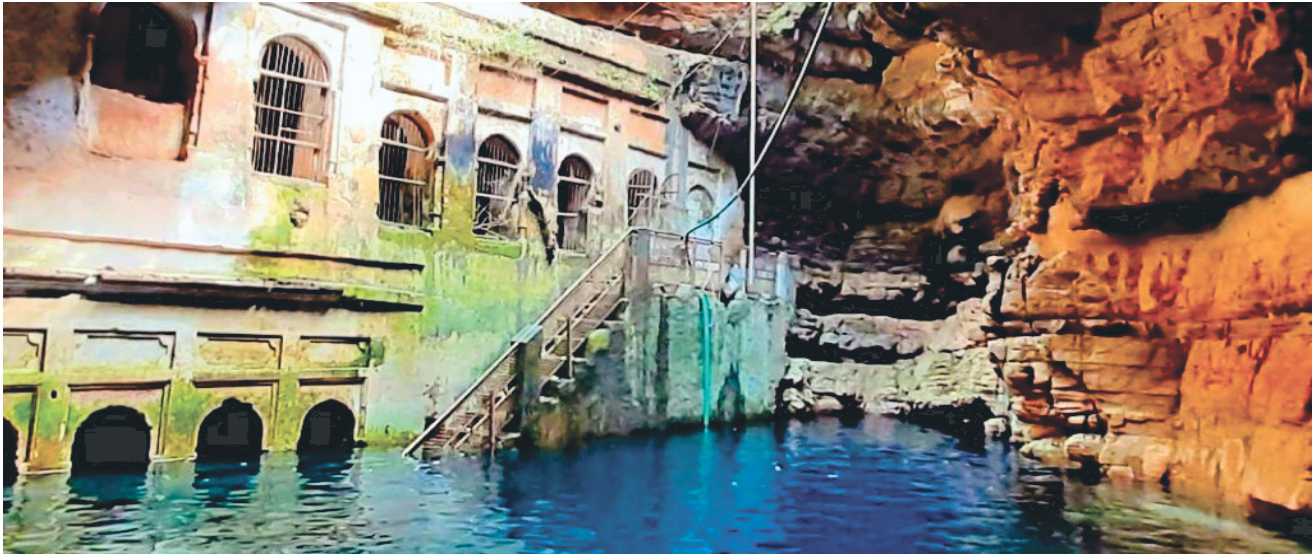
‘झाँसी गले की फाँसी’ यह कहावत अंग्रेजों के समय से प्रचलित है। जब बुंदेलखंड का सारा प्रशासन झाँसी से ही संचालित होता था। तब लोगों में कानून का डर बैठा हुआ था जिस कारण इसे ‘गले की फाँसी’ कहा गया। दतिया में माँ बगलामुखी का प्रसिद्ध मंदिर पीताम्बर शक्ति पीठ के नाम से स्थित है। साथ ही यहाँ का वातावरण शांत है जिस कारण इसे ‘गले का हार’ कहा गया है। ललितपुर के उधार मिलने के बारे में, तो यह परम्परा आज भी यहाँ प्रचलित है। चूँकि ललितपुर में व्यापार के मामले में जैन समाज की प्रधानता है और जैन लोग यदि आपसे थोड़े से भी परिचित हैं तो आप उनसे महीनों सामान उधार खरीद सकते हैं। यहाँ आपको क्रेडिट कार्ड की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

बात करें यहाँ के पर्यटन की तो श्री रामराजा सरकार की नगरी ओरछा, जो कि निवाड़ी जिले में स्थित है, ‘बुंदेलखंड की अयोध्या’ के नाम से इसे जाना जाता है। यहाँ पर प्रभु श्री राम को राजा के रूप में आज भी ‘गार्ड ऑफ ऑनर’ दिया जाता है। इसके अलावा यहाँ स्थित ओरछा दुर्ग, विष्णु भगवान का चतुर्भुज मंदिर और साथ ही बेतवा नदी की कल-कल करती जलधारा, बरबस ही आपका मन मोह लेती है।



इसी प्रकार छतरपुर जिले की बिजावर तहसील में पर्वत शृंखलाओं के बीच स्थित है श्री जटाशंकर धाम। इसे स्थानीय लोग 'बुंदेलखंड का केदारनाथ धाम' कहते हैं क्योंकि भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर पर्वतों के बीच स्थित है। यहाँ बारिश के मौसम में पर्वतों से बहता हुआ जल, जो कि मंदिर की सीढ़ियों से होकर बहता है, काफी सुंदर लगता है। सावन के महीने में यहाँ श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है।

छतरपुर जिले में ही एक अन्य स्थान है भीमकुंड जहाँ आप प्रकृति के शांत और सुंदर वातावरण का अनुभव कर सकते हैं। शहरी भीड़-भाड़ और शोरगुल से दूर सुंदर पर्वत-शृंखलाओं एवं हरे-भरे वातावरण के बीच यहाँ पहुँचते ही आपके मन की इच्छाएँ शून्य हो जाती हैं। प्रकृति के सिवाय यहाँ आप किसी अन्य के बारे में सोच ही नहीं पायेंगे।



बुंदेलखंड की आध्यात्मिक नगरी चित्रकूट को माना जाता है। यहाँ भगवान राम ने अपने वनवास का समय बिताया था। यहाँ पर भरतकूप, सीता रसोई, हनुमान धारा और श्री कामतानाथ जी मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

महोबा आल्हा-ऊदल की नगरी और अपने पान के लिए प्रसिद्ध है। ललितपुर जैन तीर्थ क्षेत्रों एवं देवगढ़ में स्थित अपने दशावतार मंदिरों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। देवगढ़ बेतवा नदी के किनारे स्थित एक प्राचीन दर्शनीय नगर है।

इसके अलावा झाँसी दुर्ग, दतिया दुर्ग, टीकमगढ़ में कुंडेश्वर धाम एवं दुर्ग आदि प्रमुख स्थल बुंदेलखंड में स्थित हैं। बुंदेलखंड की प्रमुख नदियाँ बेतवा, केन, धसान और काली सिंध हैं। बेतवा और केन नदियाँ बुंदेलखंड की जीवनधारा के समान हैं क्योंकि ये बुंदेलखंड जैसे शुष्क इलाके में भी वर्ष भर इस क्षेत्र को जल उपलब्ध कराती हैं। बहुत सारे बाँधों का निर्माण इन नदियों पर हुआ है जिनमें से राजघाट, माताटीला बाँध, जो कि बेतवा नदी पर स्थित प्रमुख बाँध हैं, झाँसी-ललितपुर के आस-पास के क्षेत्र को सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराते हैं।

छतरपुर जिले में खजुराहो अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल है। यहाँ देश—विदेश से लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। यहाँ मंदिरों पर उभरी कलाकृतियाँ तत्कालीन समय की दिनचर्या को दर्शाती हैं।

छतरपुर से आगे बढ़ने पर आप पन्ना पहुँचते हैं, जहाँ की खासियत किसी से छुपी नहीं है। इसे 'हीरों की नगरी' के नाम से जाना जाता है। छतरपुर और पन्ना महाराजा छत्रसाल की रियासत माने जाते हैं। पन्ना में अनेक रमणीय स्थल जैसे पन्ना बाघ अभ्यारण्य, पांडव फाल, बृहस्पति कुण्ड आदि स्थित हैं। इसके अलावा श्री वृन्दावन के सात ठाकुरों में से एक ठाकुर श्री जुगल किशोर सरकार का मंदिर भी यहाँ स्थित है। पन्ना में यूरोपियन शैली में बना श्री बलदाऊ जी का मंदिर भी काफी प्रसिद्ध है।

बेतवा पर ही स्थित पारीछा बांध जिससे पारीछा तापीय परियोजना संचालित होती है, बिजली संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसी प्रकार केन नदी पन्ना टाइगर रिजर्व के जानवरों को वर्ष भर पानी उपलब्ध कराती है।



बुंदेलखंड अपनी नृत्य एवं गायन कलाओं के लिए भी प्रसिद्ध है यहाँ के प्रमुख नृत्य राई, सैरा, धिमराई चरकुला आदि हैं। यहाँ के विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों में इनका प्रदर्शन होता है। एक किंवदंती के अनुसार होली की शुरुआत झाँसी में स्थित एरच कस्बे से हुई ऐसा माना जाता है। स्थानीय लोगों के अनुसार इसे 'भक्त प्रहलाद की नगरी' कहा जाता है और इसी मान्यता को साकार करने हेतु यहाँ होली पर प्रतिवर्ष होली महोत्सव का आयोजन किया जाता है जो कि तीन दिवस चलता है। जहाँ विभिन्न प्रकार के बुंदेली सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं और अंत में होली वाले दिन एक दूसरे पर रंग डालकर होली का त्योहार मनाते हैं।

इतना सब होने के बावजूद भी बुंदेलखंड शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग के मामलों में पिछड़ा हुआ है। बुंदेलखंड अब भी अपने अस्तित्व की बाट जोह रहा है। बहुत बार बुंदेलखंड को राज्य बनाने की माँग की गई किन्तु दो राज्यों का मामला होने के कारण यह हमेशा लंबित ही रहा है।

इस तरह बुंदेलखंड आधुनिक सुख—सुविधाओं से वंचित होने के बावजूद भी अपने गौरवपूर्ण इतिहास और जैव विविधता को समेटे हुए दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहा है।

मेरी रेल यात्रा के अनुभव

निधि गौतम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



ट्रेन दिखाती जीवन का सच, कथित अमीरी और गरीबी,
जनरल से श्री टियर, दूसरा दर्जा फिर ए.सी. की करीबी,
ग्वालियर से जब प्रयागराज, मैं अपने घर को जाती,
ट्रेन यात्रा विस्मय में मुझको डाल अचंभित कर जाती,
प्लेटफॉर्म पर देखा मैंने कई तरह के लोगों को,
कुछ तो कथित साहब जैसे, कुछ गठरी-मोठरी वालों को,
बैठ ट्रेन में जब मैंने अपना बेड लगाया,
तब देखा मैंने कुछ हुजूम सा भीतर आया,
लगने लगा एक आदमी का बेड, बड़ी ही धक्का मुक्की से
जिसका देखा मैंने चाल-चलन कुछ कथित नेताओं जैसा,
वो अटेंडेंट को लगा डाँटने, बेड देते हो गंदा,
नौकरी तेरी जाएगी, तू सुन, मेरा है ऊँचा ओहदा,
अटेंडेंट मेरे जैसा सीधा और सरल, सबको कहता साहब-साहब,
वाशरूम के रास्ते देखा आदमी-औरत ऊपर उसके बच्चा,
वह भी सब थे मेरे जैसे, पर नहीं थी उनकी कोई सीट,
टी.टी.ई. से करते मिन्नत, वे सब थे सकुचाये से,
टी.टी.ई बोला नियम, कि नहीं है कोई छूट सी,
रात में भी देखा उनको वाशरूम के पास सिमटे हुए से,
आने-जाने वालों को देखे वो सब अचरज से,
पैंट्री कार का चाय बेचने वाला कहता सबको सर,
वह भी था मेरे जैसा सीधा, सरल और निरंतर,
बाहर विंडो से देखा मैंने, सब देखें अचरज हो कर ए.सी. कोच को,
गंतव्य पर देखा मैंने जनरल में यात्रियों को,
सब अपने ही जैसे थे सीधे और सरल,
फिर काहे को इतनी किस्मत, श्रेणी और विकल,
सबके लिए समान है सूरज, हवा अविरल,
मैंने सोचा छोड़ो सब और बस अपने घर के लिए निकल।

बच्चों का अनुशासन

अशोक कुमार यादव

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



बच्चों का पालन-पोषण और उनके अनुशासन का सवाल प्रत्येक माता-पिता और समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक माता पिता को इसके लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। अनुशासन से बच्चों में स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी, आत्म-नियंत्रण और सामाजिक मूल्यों की समझ पैदा होती है। बच्चों का अनुशासन न केवल उनके अच्छे भविष्य के लिए आवश्यक है, बल्कि यह उनके मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास में भी मदद करता है। आजकल माता-पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण वे अपनी व्यस्त दिनचर्या से बच्चों को समय देना भूल जाते हैं जिससे अक्सर बच्चे अकेलेपन के शिकार हो जाते हैं और वे सही-गलत का फर्क नहीं कर पाते हैं और गलत संगत का शिकार हो जाते हैं।

अनुशासन का महत्व

अनुशासन बच्चों को समाज में उचित व्यवहार की समझ देता है। यह उन्हें समझाता है कि उनके कार्यों का दूसरों पर प्रभाव पड़ता है और समाज में सामंजस्य से रहने हेतु प्रोत्साहित करता है। यह बच्चों को आत्म-नियंत्रण और स्वाभाविक जिम्मेदारी सिखाता है, जिससे उनका व्यक्तित्व मजबूत बनता है और उन्हें जीवन में आने वाली कठिनाइयों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। इसके द्वारा बच्चों में अच्छे आहार, अध्ययन और खेलकूद की आदतें विकसित होती हैं। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और जीवन में इसकी विशेष महत्ता होती है, बच्चों का मानसिक संतुलन भी अच्छा रहता है, जिससे वे तनाव और दबाव से निपट सकते हैं। इससे समाज में उनके रिश्ते मजबूत होते हैं जिससे उन्हें अच्छा जीवन जीने में काफी मदद मिलती है। इसका सीधा प्रभाव उनकी आजीविका पर भी पड़ता है।

अनुशासन के प्रकार

इसमें बच्चों को सकारात्मक तरीके से सिखाने की कोशिश की जाती है। जैसे, जब बच्चा सही काम करता है, तो उसकी सराहना की जाती है जिससे उसका हौसला बढ़ता है और उसके अन्दर बड़े कार्य करने की हिम्मत और आत्मविश्वास पैदा होता है। बच्चों को उनके गलत कार्यों के लिए सजा दी जाती है। यह तरीका कभी-कभी बच्चों के आत्म-सम्मान को ठेस भी पहुँचा सकता है इसलिए बहुत ही समझदारी से काम लेना चाहिए जिससे उनके ऊपर नकारात्मक प्रभाव न पड़ने पाये।

अनुशासन सिखाने के तरीके

बच्चों को समझाने में सटीकता और स्पष्टता जरूरी है। उन्हें यह बताना कि सही और गलत क्या है, बेहद आवश्यक है और इसको समझाते समय उनके अन्दर किसी भी तरह का संशय नहीं होना चाहिए जिससे वे उसका सही-गलत का अर्थ समझ सकें। घर में उचित नियमों का पालन करवाना और समय सीमा तय करना बच्चों के

अनुशासन को मजबूत बनाता है। उन्हें ऐसा बिलकुल भी नहीं लगना चाहिए कि उनकी प्रत्येक बात मानी जायेगी। इससे उनके अंदर 'न' को सहने की भी क्षमता विकसित होगी। बच्चों को अच्छे व्यवहार के लिए प्रेरित करने के लिए उनकी सराहना करनी चाहिए। जैसे, अगर बच्चा समय पर अपना गृहकार्य करता है तो उसकी तारीफ करनी चाहिए और उनकी किसी दूसरे बच्चे के साथ तुलना नहीं करनी चाहिए। यदि बच्चा बार-बार गलत कार्य करता है, तो उसे हल्की सजा दी जा सकती है, लेकिन यह सजा अधिक कठोर नहीं होनी चाहिए, जिससे बच्चे का मानसिक संतुलन प्रभावित हो और उसे यह एहसास हो कि गलती करने से सजा मिलेगी जिससे उसकी गलतियों पर अंकुश लगेगा। बच्चों को अच्छा इंसान बनने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा देना जरूरी है। उन्हें यह सिखाना चाहिए और उनके कार्यों के सामाजिक परिणाम क्या हो सकते हैं। यह बहुत ही अच्छी चीज है, इसे बच्चों को आत्मसात करवा देना चाहिए।

माता-पिता की भूमिका

माता-पिता का बच्चों के अनुशासन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उनका आचरण, मूल्य और व्यवहार बच्चों के अनुशासन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। माता-पिता को हमेशा बच्चों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। बच्चे माता पिता को ही प्रथम शिक्षक मानते हैं और जीवन में उनके ही आदर्शों पर आगे बढ़ते हैं ऐसी स्थिति में माता-पिता का आचरण उनके जीवन पर बहुत प्रभाव डालता है इसलिए माता-पिता को बच्चों के सामने कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। माता-पिता बच्चों को केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन के वे मूल्य भी सिखाते हैं जो कि उनको कठिन परिस्थितियों में उन्हें निर्णय लेने में मदद करते हैं और उनको उनकी खुद की जिंदगी जीने में काफी सहूलियत प्रदान करते हैं। माता-पिता की बच्चों के साथ समय बिताने की जरूरत है ताकि वे उनके मानसिक और भावनात्मक विकास में मदद कर सकें। आजकल परिवार के सभी सदस्य सोशल मीडिया से इस कदर जुड़े हुए हैं कि वे एक साथ होकर भी अलग-अलग खोये रहते हैं। आजकल परिवार, एकाकी परिवार की तरफ बढ़ रहे हैं जिससे परिवार में लोगों की संख्या कम हो गयी है और माता-पिता दोनों के नौकरीपेशा होने की स्थिति में उनका चाह कर भी बच्चों के साथ समय बिताना मुश्किल हो गया है। ऐसी स्थिति में बच्चों में ऑटिज्म जैसी समस्या पैदा हो जाती है। माता-पिता को बच्चों की समस्याओं और सवालों को सुनकर उनका समाधान निकालने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें बच्चों के अन्दर ये आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए कि हर परिस्थिति में आप उनके साथ हैं एवं उनकी हर समस्या को प्यार से सुनते हैं एवं सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक बच्चों के जीवन में दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूलों में भी अनुशासन की कड़ी निगरानी रखी जाती है, और शिक्षक बच्चों को जीवन का महत्वपूर्ण ज्ञान देते हैं। स्कूलों में एक सकारात्मक वातावरण बनाना जरूरी है, ताकि बच्चे आत्मविश्वास से भरपूर हों एवं उनके अन्दर जीवन के सभी पहलुओं पर मजबूती से विचार करने की आदत पैदा हो। सकारात्मक माहौल से उनके अन्दर ऊर्जा का प्रवाह होता है। बच्चों को स्कूल में नियमों का पालन सिखाना चाहिए जिससे उनके अन्दर छोटे-बड़े का फर्क सीखना एवं अनुशासन में रहने की आदत आती है। बच्चों की गलतियों को सहानुभूति और समझदारी से संभालना चाहिए। उनके अन्दर विद्रोह की भावना आने से रोकना चाहिए। "जियो और जीने दो" की भावना विकसित करनी चाहिए।

समाज का योगदान

समाज का भी बच्चों के अनुशासन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब समाज में अच्छे मूल्यों का प्रचार-प्रसार होता है, तो बच्चे उसे आत्मसात करते हैं। बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारी और समाज के नियमों का पालन करना सिखाना चाहिए। बच्चे ही बड़े होकर समाज को बनाते हैं अतः उनको सामाजिक मूल्यों को समझाना जरूरी है। समाज में मौजूद आदर्श व्यक्तित्व बच्चों को प्रेरित करते हैं इसलिए बच्चों को समाज में मौजूद आदर्श व्यक्तित्वों के बारे में बताते रहना चाहिए या फिर उनसे संबंधित कहानियाँ सुनाते रहना चाहिए।

वर्तमान में अनुशासन की चुनौतियाँ

आजकल बच्चों के पास स्मार्टफोन और इंटरनेट जैसे उपकरण होते हैं, जो उनके ध्यान को भटका सकते हैं और वे सही-गलत का फर्क समझ नहीं पाते इसलिए वे गलत दिशा में अपनी ऊर्जा बर्बाद करने लग जाते हैं। पारंपरिक परिवारों की तुलना में, आजकल अधिकतर परिवारों में माता-पिता दोनों ही काम करते हैं, जिससे बच्चों को अनुशासन सिखाने में कठिनाई हो सकती है। समय के अभाव में बच्चे अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं और वे गलत कदम भी उठा लेते हैं। बढ़ते मानसिक दबाव के कारण बच्चों को अनुशासन सिखाने में कठिनाइयाँ आती हैं। कई बार बच्चों पर मानसिक दबाव इतना बढ़ जाता है कि वे इसे सहन नहीं कर पाते हैं एवं आत्महत्या जैसे गंभीर कदम भी उठा लेते हैं।

निष्कर्ष

बच्चों का अनुशासन एक ऐसा मुद्दा है जिस पर हमें विचार करना चाहिए। माता-पिता, शिक्षक और समाज का कर्तव्य है कि वे बच्चों को अच्छे अनुशासन में ढालें, ताकि वे भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बन सकें। अनुशासन से बच्चों में आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदारी और सही-गलत का भान पैदा होता है। हमें बच्चों के अनुशासन को केवल सजा देने के रूप में नहीं, बल्कि उन्हें अच्छे आदर्शों, मूल्यों और सकारात्मक मार्गदर्शन देने के रूप में देखना चाहिए।

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।”

-आचार्य विनोबा भावे

संतोष

नीरज मित्तल
लेखापरीक्षक



जीवन में हम सब कुछ न कुछ पाने की चाह में लगे रहते हैं, और उसे पाने के बाद लगता है कि ऐसा भी नहीं है कि इसमें ही सब कुछ मिल गया हो और फिर हम दूसरी चाह को पाने में लग जाते हैं; लेकिन जब हमें किसी काम को करने से अंदरूनी खुशी मिलती है तो जो विचार आता है, उसे संतोष कहते हैं। ऐसा ही एक एहसास मुझे हुआ जिसे मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

मैं आंध्र प्रदेश के शहर विजयवाड़ा में लेखापरीक्षक के पद पर कल्याण अनुभाग में कार्य कर रहा था तब मुझे कई बार उच्च अधिकारियों के लिए मंदिरों में प्रोटोकॉल ड्यूटी पर जाने का कार्य मिला। जिसमें मैंने देखा कि मंदिर के बाहर लम्बी लाइन में लोग लगे हुए हैं और मैं उच्च अधिकारियों के साथ होने के कारण बिना किसी प्रतीक्षा के अन्दर जा सकता था। तब मुझे अच्छा लगा कि बिना किसी तकलीफ के दर्शन हो गये परन्तु जब यह बार-बार होने लगा तब एहसास हुआ कि कहीं न कहीं कुछ कमी है। कई बार जब मुश्किल से प्राप्त होने वाली चीज हमें आसानी से मिलने लगे तब हम उसका महत्व कम आँकने लगते हैं। अब मैं अकेले भी जाता तो इतना हुनर सीख चुका था कि अपने ऑफिस का कार्ड दिखा कर मंदिरों में आसानी से दर्शन कर लेता।



एक दिन मेरे दोस्त के घर कुछ मेहमान आये और मुझे भी साथ में मंगलगिरि पनाकला नरसिम्हा स्वामी मंदिर आने के लिए बोलने लगे। मंगलगिरि पनाकला नरसिम्हा स्वामी मंदिर, मंगलगिरि में शुभ पहाड़ी की तलहटी में स्थित है, जो आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के विजयवाड़ा भाग का हिस्सा है। उस पहाड़ी पर और उसके नीचे

स्थित तीन मंदिरों की शृंखला में से यह एक है, अन्य दो पहाड़ी पर पनाकला नरसिम्हा मंदिर और गंडाला हैं। पहाड़ी की चोटी पर नरसिंह मंदिर हैं। मुझे कुछ काम होने के कारण जाने का मन नहीं था परन्तु उनके जिद करने के कारण मैंने उनको जाने के लिए हाँ कर दिया। मैं कई बार उस मंदिर में जा चुका था तो मेरा मन जाने का नहीं था पर प्रभु की इच्छा मानकर मैं उनके साथ चल पड़ा। हम सब अपनी एक्टिवा और बाइक लेकर मंदिर पहुँचे क्योंकि मंदिर पहाड़ी पर था तो बड़ी गाड़ियों को नीचे ही रोक दिया जाता है। जब मैं अपनी बाइक स्टैंड में खड़ी करने गया तो एक लड़की आई और बोली कि क्या आप मेरी मदद करेंगे? मुझे लगा कोई पैसे मांगने वाली होगी पर वो बोली कि अन्ना (भाई) मेरे पापा नीचे कार पार्किंग में हैं और वो चलने से लाचार हैं। क्या आप उनको ऊपर तक लाने में मदद करेंगे? मैंने उसको हाँ बोला और उसके साथ गया। जब मैं वहाँ पहुँचा तब पाया कि वह एक 50—60 साल का आदमी था जो पैरों से लाचार था और उसकी आँखों में आँसू थे। मैंने पूछा कि ये रो क्यों रहे हैं? तब उस लड़की ने बताया कि हम सब लोग दर्शन के लिए आये थे पर गाड़ी ऊपर तक न ले जा पाने के कारण सभी रिश्तेदार तो पैदल चले गये पर ये नहीं जा पाए और मैं इनके लिए यहीं रुक गई, इसीलिए ये तब से रो रहे हैं। उसने अपने पापा को तेलुगू में कहा कि “देखो भगवान ने अन्ना को भेज दिया है अब हम दोनों दर्शन करेंगे, चलो!” इतना सुनते ही वो बिना कुछ बोले मेरे सामने हाथ जोड़ने लगे। मैंने मुस्कुरा कर उनको नमस्ते कहा और उनको अपनी बाइक पर बैठाया, पीछे से उस लड़की ने उनको सहारा दिया। हम धीरे — धीरे ऊपर मंदिर में पहुँचे। वहाँ पहुँच कर देखा कि बहुत लम्बी लाइन है। वे दोनों ये देख कर परेशान हो गये पर शायद ऊपर वाले की इच्छा थी कि वो उनके दर्शन करें। सच है उसकी मर्जी के बिना उसके दर्शन भी नहीं हो सकते इसीलिए उन्होंने मुझे वहाँ भेज दिया। दर्शन आसानी से कैसे होंगे, इस काम में मैं माहिर हो चुका था। मैं ने दोनों को वहीं रुकने को कहा और तुरन्त मंदिर के प्रोटोकॉल ऑफिस जाकर उनके लिए जल्दी दर्शन की व्यवस्था की और मेरे विनती करने से मंदिर प्रशासन ने उन दोनों के लिए विशेष दर्शन की अनुमति दे दी। जब इस बात को मैंने बताया तो दोनों बहुत खुश हो गये। इतना करके मैं अपने साथ वालों के पास चला गया। मैं उस दिन साधारण लाइन से ही गया। मैं लाइन में खड़े हुए बहुत खुश था और मन ही मन सोच रहा था कि अब समझा कि मैं यहाँ आया नहीं था बल्कि मुझे यहाँ भेजा गया था। उस दिन मुझे भगवान के दर्शन करके परम आनन्द की अनुभूति हुई।

जब मैं बाइक लेकर नीचे जा रहा था वहाँ कुछ लोगों की भीड़ थी। वहाँ वो लड़की भी थी जो मुझे मिली थी वो मुझे देख कर चिल्ला कर बोली “अन्ना, थैंक यू”। मैंने बाइक रोकी और पूछा “दर्शन कैसे हुए?” वो बोली “बहुत ही अच्छे”। तभी वो सब लोग जो उसके साथ थे वो भी आ गये और कोई मुझे आशीर्वाद दे रहा था तो कोई मुझे धन्यवाद कह रहा था। मैंने उन सबको मुस्कुरा कर नमस्ते किया। उस दिन मैंने अपने अंदर के उस संतोष का अनुभव किया।



ऊटी: बादलों के बीच बसा एक जादुई शहर

सेहरिश फुजेल

लेखापरीक्षक



अगर कभी जिंदगी की भागदौड़ से विराम लेकर किसी शांत और सुरम्य जगह जाना हो, तो ऊटी से बेहतर कोई जगह नहीं। घुमावदार रास्तों से होते हुए जब आप इस हिल स्टेशन की ओर बढ़ते हैं, तो हर मोड़ पर प्रकृति का एक नया रूप देखने को मिलता है। ऊटी सिर्फ पर्यटकों की मंजिल नहीं, बल्कि आत्मा को सुकून देने वाली जगह है। यहाँ की ताजी हवा, ठंडी फिज़ाएँ और हरियाली का जादू आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। चाहे आप रोमांच के शौकीन हों, प्रकृति प्रेमी हों, या बस कुछ पल शांति में बिताना चाहते हों, ऊटी हर किसी के लिए एक बेहतरीन जगह है। यहाँ का हर कोना इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। ऊटी में बिताया गया हर लम्हा आपको प्रकृति के और करीब ले जाता है और यही इस जगह की सबसे खास बात है।



बादलों की चादर ओढ़े हुए ऊटी को यँ ही 'क्वीन ऑफ हिल स्टेशन' नहीं कहा जाता। यह जगह एक जादुई सपने जैसी लगती है, जहाँ प्रकृति का हर रंग अपनी खूबसूरती की कहानी कहता है। मैं अपने परिवार के साथ कुछ साल पहले जून के महीने में ऊटी गई थी। अगर आपको बारिश पसंद है तो ऊटी घूमने के लिए ये सबसे बेहतर समय है। घुमावदार पहाड़ी रास्तों से होते हुए जब ऊटी पहुँचे, तो ऐसा लगा जैसे किसी दूसरी दुनिया में कदम रख दिया हो। हरियाली की गोद में पहाड़ों के बीच, ऊटी में प्रवेश करते ही सुकून का एहसास हुआ। आज भी ऊटी की तस्वीरें देखती हूँ तो वहाँ के जादुई अनुभव की यादें ताजा हो जाती हैं।

ऊटी की पहली झलक: सफर की शुरुआत

ऊटी बाकी पहाड़ी इलाकों से काफी अलग है। जैसे ही हमारी कार हरे-भरे पहाड़ों की ओर बढ़ने लगी, ठंडी हवा ने हमारे चेहरे को छूकर सफर की थकान मिटा दी। रास्ते में घने जंगलों के बीच से गुजरते हुए जब कभी सूरज की किरणें बादलों के बीच से झाँकतीं, तो नजारा और भी मंत्रमुग्ध कर देने वाला लगने लगता। रास्ते में हमने एक खूबसूरत जगह पर रुककर मौसम का आनंद लिया और कुछ शानदार तस्वीरें भी लीं।

जून का महीना था और ऊटी में बरसात का मौसम अपने चरम पर था। बारिश की हल्की फुहारों के बीच हमारी कार पहाड़ों की घुमावदार सड़कों पर आगे बढ़ रही थी। चारों ओर हरियाली और ठंडी हवा का एहसास ऐसा था, मानो कोई सुकून भरी धुन बज रही हो। सफर जितना खूबसूरत था, ऊटी पहुँचने की उत्सुकता उतनी ही ज्यादा।

लेक व्यू रिसॉर्ट: एक खूबसूरत एहसास

हम जिस रिसॉर्ट में रुके थे, वह भी किसी खूबसूरत सपने से कम नहीं था। आम रिसॉर्ट्स से यह काफी अलग था। यहाँ ठहरना ही अपने आप में एक बेहतरीन अनुभव था। यहाँ हर यात्री के लिए छोटे-छोटे कॉटेज बने हुए थे और खिड़की से खूबसूरत नजारे दिख रहे थे। हमारा कॉटेज हल्की ऊँचाई पर था और उसके सामने एक छोटा सा गार्डन भी था। बारिश की बूंदों के बीच उस कॉटेज में रहना एक जादुई अनुभव था। सुबह उठकर जब हमने खिड़की से बाहर देखा, तो धुंध से ढके पहाड़ और हल्की बारिश के बीच चाय की चुस्की लेना किसी कविता से कम नहीं था। खूबसूरत नजारों के बीच ठहरना एक बहुत ही यादगार अनुभव था।

चॉकलेट फैक्ट्री: मीठी यादें

ऊटी पहुँचकर हमें यहाँ की मशहूर चॉकलेट फैक्ट्री जाने का भी मौका मिला। खूबसूरत पहाड़ों और हरियाली के बीच स्थित यह फैक्ट्री एक ऐसी जगह है जहाँ स्वाद और सुंदरता का अनोखा मेल आपको देखने को मिलता है। यहाँ घुसते ही चारों तरफ चॉकलेट की मीठी खुशबू फैल रही थी। यहाँ हमने चॉकलेट्स को पूरी तरह से बनते हुए देखा। हमने वहाँ कई तरह की चॉकलेट्स देखी जैसे—डार्क चॉकलेट, मिल्क चॉकलेट, हेजलनट चॉकलेट, और भी न जाने कितनी वैराइटी। सबसे मजेदार पल वह था जब हमें चॉकलेट चखने का मौका मिला। ताजे बने हुए चॉकलेट्स का स्वाद इतना लाजवाब था कि हमने अपने लिए और दोस्तों के लिए ढेर सारी चॉकलेट्स खरीद लीं।

टी फैक्ट्री और टी म्यूजियम: ऊटी की सुगंधित पहचान

ऊटी सिर्फ खूबसूरती के लिए ही नहीं, बल्कि यहाँ की चाय के लिए भी काफी मशहूर है। इसलिए हमने टी फैक्ट्री और टी म्यूजियम की सैर भी की। यहाँ हमें चाय बनाने की पूरी प्रक्रिया देखने को मिली—कैसे पत्तियाँ तोड़ी जाती हैं, कैसे उनकी प्रोसेसिंग होती है और फिर कैसे वे पैक की जाती हैं। सबसे अच्छी बात यह थी कि हमें अलग-अलग तरह की चाय का स्वाद चखने को मिला—इलायची टी, मसाला टी, लेमन टी और ग्रीन टी। खूबसूरत नजारे देखते हुए चाय की चुस्कियाँ लेने का मजा ही कुछ और था। चाय की ताजगी और उसकी सुगंध आज भी याद आती है।

ऊटी बॉटनिकल गार्डन: हरियाली की गोद में

ऊटी में घूमने की जगहों में से एक बेहतरीन जगह है ऊटी बॉटनिकल गार्डन। जैसे ही हम गार्डन के अंदर पहुँचे, हमें हरियाली की एक नई दुनिया देखने को मिली। रंग-बिरंगे फूल, दुर्लभ पौधे और घने पेड़ों से भरा यह गार्डन किसी सपनों की दुनिया जैसा लगता है। यहाँ हमने 20 मिलियन साल पुराने एक पेड़ का तना भी देखा, जो इस गार्डन का मुख्य आकर्षण था। इस गार्डन में इतने तरह के पेड़, पौधे और फूल थे जितने हमने कभी कहीं नहीं देखे थे। हल्की-हल्की बारिश वहाँ घूमने के आनंद को दोगुना कर रही थी। हमने वहाँ बहुत सारी सुंदर-सुंदर तस्वीरें खींचीं। गार्डन की ताजी हवा और खूबसूरत नजारे हमें वहीं बस जाने को लालायित कर रहे थे।

रोज गार्डन : गुलाबों की जन्नत

ऊटी के सफर के आखिरी दिन हमने घूमा था रोज गार्डन। यह गुलाबों से भरा गार्डन किसी जन्नत से कम नहीं था। अगर आप फूलों से प्यार करते हैं और गुलाब आपका मनपसंद फूल है, तो ऊटी का रोज गार्डन आपको जरूर देखना चाहिए। यहाँ हर तरफ गुलाब ही गुलाब थे — लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और भी कई अनगिनत रंगों में। यहाँ का वातावरण इतना ताजगी भरा था कि हम घंटों वहीं बैठकर गुलाबों की खुशबू का आनंद लेना चाहते थे। मैंने वहाँ के कुछ अनोखे गुलाबों की तस्वीरें भी लीं, जो शायद किसी और जगह देखने को नहीं मिलते।



वेनलॉक डाउंस 9वीं माइल पॉइंट: सिनेमा जैसी खूबसूरती

ऊटी से लौटते वक्त हमने वेनलॉक डाउंस 9वीं माइल शूटिंग पॉइंट भी देखा, जो बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग के लिए मशहूर है। चारों तरफ पहाड़, हरी-भरी वादियाँ और नीले आसमान का ऐसा नजारा था कि हमें लगा जैसे हम किसी फिल्म के सेट पर खड़े हों। हल्की-हल्की धुंध और ठंडी हवा इस जगह को और भी खूबसूरत बना रही थी। यह शूटिंग पॉइंट काफी बड़ा था और बेहद खूबसूरत भी। हमने यहाँ ढेर सारी तस्वीरें खींचीं, गरमा-गरम भुट्टे का आनंद लिया और फिर कुछ समय प्रकृति की इस अद्भुत रचना में खो गए।

ऊटी का जादू: एक यादगार सफर

दिल में इस जगह की मीठी यादें और हल्की-हल्की ठंडक लिए हुए हमने ऊटी से वापसी की। ऊटी की यह यात्रा मेरे लिए सिर्फ एक ट्रिप नहीं थी, बल्कि जीवन भर संजोकर रखने वाली यादों का एक खूबसूरत हिस्सा बन गई। यहाँ का हर कोना, हर गली और हर पहाड़ अपने आप में एक अलग कहानी बयां करता है और आपको एक अनोखा अनुभव देता है। कभी पहाड़ों की शांति, कभी चाय की भीनी खुशबू, कभी चॉकलेट का मीठा स्वाद और कभी बारिश की ठंडी फुहारें—ऊटी का हर पल जादुई था। यहाँ का मौसम, यहाँ की खूबसूरती और यहाँ का शांत वातावरण मन में घर कर गया था। शायद यही ऊटी का जादू है— एक बार देखने के बाद यह हमेशा के लिए दिल में बस जाता है।

अगर आप प्रकृति प्रेमी हैं और आपको पहाड़ों से प्यार है, तो ऊटी आपको जरूर जाना चाहिए। यह जगह सिर्फ घूमने के लिए नहीं, बल्कि अपनी आत्मा को ताजगी देने के लिए बनी है। और हाँ, ऊटी से लौटते वक्त कुछ चॉकलेट और चाय जरूर साथ ले आइए, यादों के साथ-साथ स्वाद भी बना रहेगा।



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

1. काव्य पाठ प्रतियोगिता

- प्रथम श्री चंद्रपाल सिंह यादव (04 / 11547)
- द्वितीय श्री राजेंद्र कुमार गर्ग (02 / 6613)
- तृतीय सुश्री सेहरिश फुजेल (04 / 11321)

2. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री दीक्षा चौहान (02 / 11240)
- द्वितीय सुश्री बुलबुल गर्ग (02 / 11457)
- तृतीय श्री अजय कुमार गौड़ (02 / 6739)

3. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

- प्रथम श्री यशवर्धन गुप्ता (02 / 11331)
- द्वितीय सुश्री अर्चना मानव (02 / 11389)
- तृतीय श्री चंद्रपाल सिंह यादव (04 / 11547)

4. निबंध लेखन प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री निधि गौतम (03 / 11523)
- द्वितीय श्री अजय कुमार गौड़ (02 / 6739)
- तृतीय श्री आलोक कुमार (04 / 11538)

5. वाद-विवाद प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री अर्चना मानव (02 / 11389)
- द्वितीय श्री शाहमीर खान (02 / 11223)
- तृतीय श्री शिवम द्विवेदी (02 / 10826)

6. पत्र लेखन प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री दीक्षा चौहान (02 / 11240)
- द्वितीय श्री पंकल अग्रवाल (02 / 11330)
- तृतीय श्री संदीप कुमार (03 / 10945)

7. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

- प्रथम श्री शिवम नामदेव (04 / 11554)
- द्वितीय श्री शिवम सोनी (04 / 11506)
- तृतीय श्री श्याम बाबू गुप्ता (02 / 10301)

8. श्रुत लेखन प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री प्रीति सिंह (02 / 11589)
- द्वितीय सुश्री बुलबुल गर्ग (02 / 11457)
- तृतीय श्री आशीष कुमार विश्वकर्मा (03 / 10671)

9. वर्णानुक्रम प्रतियोगिता

- प्रथम सुश्री दीक्षा चौहान (02 / 11240)
- द्वितीय श्री श्याम बाबू गुप्ता (02 / 10301)
- तृतीय श्री आशीष कुमार विश्वकर्मा (03 / 10671)



कार्यालयीन गतिविधियाँ

(अ) कार्यालयीन गतिविधियाँ

(1) ऑडिट दिवस 2024 सप्ताह के दौरान के कार्यालय में दिनांक 12.11.2024 से 21.11.2025 तक टेनिस बॉल क्रिकेट का आयोजन किया गया, जिसमें पाँचों कार्यालयों की टीमों ने अपने-अपने कार्यालयों का प्रतिनिधित्व किया।

(2) ऑडिट दिवस 2024 सप्ताह के दौरान दिनांक 14.11.2024 को कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



(ब) मनोरंजन गतिविधियाँ

(1) 26 जनवरी 2025 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु खेल-कूद प्रतियोगिताओं के साथ मनोरंजन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया तथा विजेताओं को गणतंत्र दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया।



सितम्बर 2024 से फरवरी 2025 तक कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की सूची

स.क्र.	नाम सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री	स्थाई क्र.	पदनाम	सेवानिवृत्ति दिनांक
1.	राज कुमार प्रजापति	02 / 11071	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	01.05.2024
2.	सुरेश चन्द्र कोरी	03 / 10196	सहायक पर्यवेक्षक	30.10.2024
3.	रामचन्द्र गोडिया	05 / 10026	एम.टी.एस	30.10.2024
4.	रामदास	05 / 10022	एम.टी.एस	29.11.2024
5.	नाथूराम	05 / 10059	एम.टी.एस	31.12.2024
6.	अशोक कुमार	05 / 10103	एम.टी.एस	31.01.2025
7.	संजय कुमार मुले	01 / 10097	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2025
8.	उदय ग्वाल्हेरकर	01 / 5809	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2025
9.	रामबाबू मरैया	04 / 10090	लेखापरीक्षक	28.02.2025

सितम्बर 2024 से फरवरी 2025 तक कार्यालय में नियुक्त हुए कार्मिकों की सूची

स.क्र.	नाम सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री	स्थाई क्र.	पदनाम	नियुक्ति दिनांक
1.	मनीषा शर्मा	05 / 11602	एम.टी.एस.	23.09.2024
2.	पौलुस लाक्रा	05 / 11604	लिपिक	23.10.2024
3.	वासुदेव	05 / 11605	लिपिक	12.11.2024

सितम्बर 2024 से फरवरी 2025 तक कार्यालय के कार्मिकों की असामयिक मृत्यु की सूची

स.क्र.	नाम सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री	स्थाई क्र.	पदनाम	मृत्यु दिनांक
1.	राघवेन्द्र सिकरवार	05 / 10452	एम.टी.एस.	18.11.2024
2.	शंकर सिंह पाल	04 / 10497	लेखापरीक्षक	27.12.2024
3.	सचिन श्रीवास्तव	02 / 10575	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	02.02.2025

‘गोपात्री’ के 30वें अंक के लिए निम्नलिखित कार्यालयों से प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुए जिसके लिए ‘गोपात्री’ पत्रिका परिवार उनका आभारी है:-

- ➡ प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम
- ➡ कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), राजस्थान, जयपुर
- ➡ कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.), उत्तराखण्ड, महालेखाकार भवन, कौलागढ़ देहरादून
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़
- ➡ क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, 20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), महाराष्ट्र, नागपुर
- ➡ कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), मध्य प्रदेश, 53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल
- ➡ कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम
- ➡ भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग, महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160020
- ➡ प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलूरु
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), पश्चिम बंगाल
- ➡ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय), इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली-110 002
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, रांची
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु, 361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई
- ➡ प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय, बेंगलोर

- ➡ कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.) केरल, तिरुवनंतपुरम
- ➡ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्या. ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली
- ➡ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), दिल्ली
- ➡ प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
- ➡ महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय पटना, बिहार
- ➡ कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय व्यय (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग), मुंबई (शाखा कार्यालय)
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-1), ओडिशा, भुवनेश्वर
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हिमाचल प्रदेश, शिमला
- ➡ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), गुजरात राजकोट



“हम सबका अभिमान है हिंदी
भारत देश की शान है हिंदी”



नराकास, ग्वालियर पुरस्कार वितरण 2024

उत्कृष्ट कार्य पुरस्कार विजेता कार्यालय



अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'गोपाद्री' हेतु द्वितीय पुरस्कार



कार्यालयीन अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'गोपाद्री' के 30वें अंक का विमोचन



संयुक्त हिंदी परववाड़ा 2024



संयुक्त हिंदी परववाड़ा 2024



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024



गणतंत्र दिवस 2025 की झलकियाँ





कचनार का फूल